ओ३म्

Postal Regn. - RTK/010/2017-19
RNI - HRHIN/2003/10425

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पाक्षिक मुखपत्र
मई 2017 (द्वितीय)

शहीद श्री सोनू आर्य

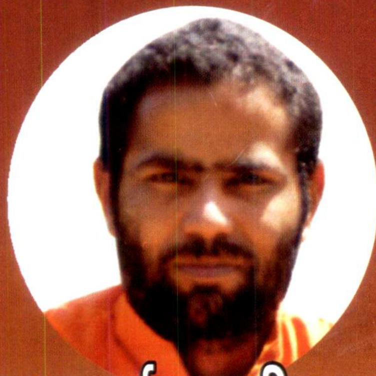

शहीद आचार्य उदयवीर आर्य

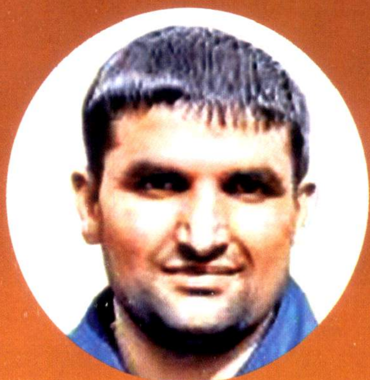

शहीद श्री संदीप आर्य

शहीद श्रीमती प्रोमिला आर्या

करौंथा काण्ड के अमर शहीद

Email : aryapsharyana@yahoo.in
Visit us : www.apsharyana.org

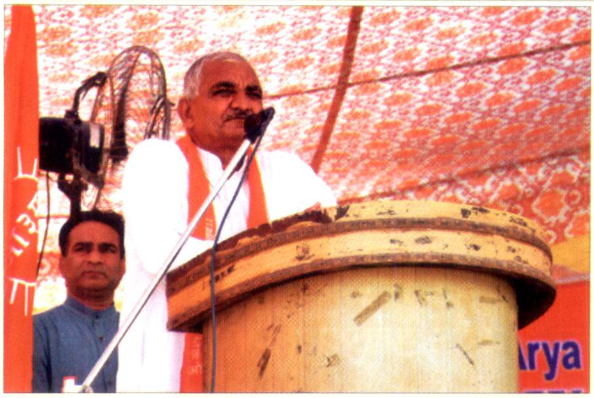

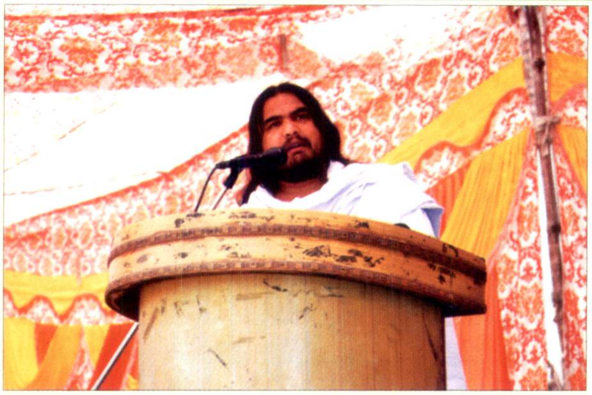

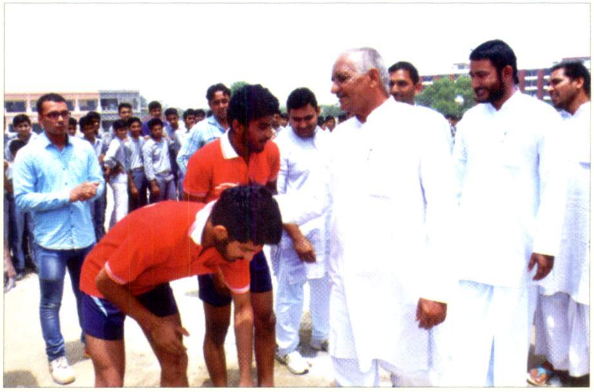

आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ रोहतक से सम्बद्ध सभी आर्य समाज के अधिकारियों को सूचित किया जाता है कि वर्ष 2016-17 का सभा को भेजा जाने वाला वेदप्रचार, दशांश एवं पत्रिका शुल्क की राशि आर्य समाज के बैंक खाते से चैक/डी.डी./पेआर्डर द्वारा भेजें। कानूनी बाध्यता के कारण सभा नकद राशि स्वीकार नहीं करेगी। जिन आर्यसमाजों का बैंक खाता नहीं है वे अपना बैंक खाता शीघ्र खुलवा लें। चैक "आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा" रोहतक के नाम से दयानन्द मठ रोहतक के पते पर भेजें।

– आचार्य योगेन्द्र आर्य, सभामन्त्री

प्रेमपूर्वक व्यवहार करने से शरीर स्वस्थ रहता है।

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,118
विक्रम संवत् 2074
दयानन्दाब्द 194

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
की
मुख पत्रिका

वर्ष 13 अंक 8

सम्पादक :
आचार्य योगेन्द्र आर्य

पत्रिका-शुल्क

देश में
वार्षिक-200 रुपये आजीवन-2000 रुपये

विदेश में
वार्षिक शुल्क 100 डॉलर
आजीवन 400 डॉलर

पत्रिका का स्वामित्व
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि०)
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक-124001

सम्पादक-मण्डल
1. आचार्य सोमदेव
2. डॉ० जगदेव विद्यालंकार
3. श्री चन्द्रभान सैनी

सम्पादकीय विभाग
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक
सम्पर्क सूत्र-
चलभाष : 89013 87993
कार्यालय : 01262-216222

ओ३म्
आध्यात्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय चिन्तन एवं वैदिक जीवन मूल्यों की पाक्षिक पत्रिका

आर्य प्रतिनिधि

मई, 2017 (द्वितीय)
16 से 30 मई, 2017 तक

इस अंक में....

1. सम्पादकीय—	
प्रभु से हमारा सम्बन्ध कैसा हो ?	2
2. सर्वकल्याण व पुरुषार्थ का हेतु यज्ञ	3
3. मनुष्य के जीवन सम्बन्धी कुछ बातें....	4
4. व्रज के तीन वीर जाट योद्धा	6
5. मनुष्य जीवन के उत्थान का एक सरल उपाय	13
5. जन्मते ही कान में वेद श्रवण-महासौभाग्य	15
6. वीर सैनिकों की जय बोलो	15
7. ईश्वर सर्वशक्तिमान् है....	16
10. समाचार-प्रभाग	18

◆◆◆

सूचना

सभी आर्यसमाजों को, आर्य शिक्षण संस्थाओं को सूचित किया जाता है कि अपने सभी प्रकार के प्रचार कार्यक्रमों का विवरण 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक पत्रिका में छापने के लिए भेजें। साथ ही विद्वानों, लेखकों, बुद्धिजीवियों से आग्रह है कि वे अपने लेख, कविता आदि निम्न ई-मेल अथवा पते पर भेजें।

सम्पादक 'आर्य प्रतिनिधि' पाक्षिक
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001
E-mail : aryapsharyana@yahoo.in
aryasabhaharyana@gmail.com

प्रभु से हमारा सम्बन्ध कैसा हो?

❑ आचार्य योगेन्द्र आर्य, मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

प्रभु की शरण में आकर भक्त ने स्तुति के अनन्तर प्रार्थना आरम्भ की कि मैं ऐश्वर्यों का स्वामी बनूं। क्योंकि अब भक्त के सन्देह दूर हो चुके। कर्मफलों के विपाक से भी उसको भय जाता रहा। अब तो वह सब संसार को भूलकर प्रभु को ही देखता है और स्वयं भी ऐश्वर्यों का स्वामी बनना चाहता है, क्योंकि भगवान् भी ऐश्वर्यों का स्वामी है अत: भक्त भी ऐश्वर्यों का स्वामी बनना चाहता है। भक्त अपने हृदय में समझता है कि जब परमात्मा के साथ मेरा पिता-पुत्र भाई-भाई का सम्बन्ध है तो उसके समान ही मुझे भी बनना चाहिये अन्यथा मेरा परमात्मा के साथ बन्धु-बान्धव भाव ही क्या ? अत: प्रभु के समान बनने में हेतु भक्त यह दिखाता है कि हमारा तुम्हारा बन्धु सम्बन्ध है अत: दोनों को एक-सा होना चाहिए। यदि तुम ऐश्वर्यों के स्वामी हो तो मुझे भी बनाओ। इत्यादि भावों को प्रकट करने के लिए ऋषि ने सातवां मन्त्र प्रार्थना में रखा है जो इस प्रकार है—

ओ३म्-स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा। यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त॥ 7॥ **(यजु० 32/10)**

(पदच्छेद) स:। न:। बन्धु:। जनिता। स:। विधाता। धामानि। वेद। भुवनानि। विश्वा। यत्र। देवा:। अमृतम्। आनशाना:। तृतीये। धामन्। अध्यैरयन्त।

(पदान्वितार्थ) स:=वह परमात्मा, न:=हमारा नाम, स्थान और उत्पत्ति प्रकार को वेद=जानता है। बन्धु:=बन्धु (है), जनिता=पिता (है), स:=वह परमात्मा, विधाता=कर्मफलों का देने वाला (है), विश्वा=सब, भुवनानि=लोकों को, धामानि=(और उन लोकों को), यत्र=जिस, तृतीये=तीसरे, धामन्=धाम (मोक्ष) में, अमृतम्=मोक्ष-सुख को, आनशाना=प्राप्त होते हुए, देवा:=ज्ञानवान् लोग, अध्यैरयन्त=स्वेच्छापूर्वक विचरण करते हैं अधिकार के साथ।

(स नो बन्धुर्जनिता) हे भगवन्! आप हमारे भ्राता और पिता हैं। मैंने ऐश्वर्यों के स्वामी बनने की इच्छा इसलिये प्रकट की है क्योंकि यह अच्छा नहीं प्रतीत होता कि एक भाई ऐश्वर्यों का स्वामी हो और एक ऐश्वर्यों का स्वामी न हो। वे पिता पुत्र ही क्या हैं जो पिता तो ऐश्वर्यों का स्वामी हो और पुत्र ऐश्वर्य रहित हो। अत: हे नाथ! इस भ्रातृभाव और पिता-पुत्र सम्बन्ध को निभाने के लिये मुझे ऐश्वर्यों का स्वामी बनाइये।

(स विधाता) मैं यह जानता हूँ कि आप कर्मफल के विधाता हैं। आप किसी को क्षमा नहीं करते। हर एक प्राणी को आपकी व्यवस्था के अनुसार कर्मफल भोगना ही पड़ेगा। पर मैं यह भी जानता हूँ कि वह कर्मफल का विधाता मेरा भाई और पिता है। कोई शत्रु नहीं है। अत: वह द्वेष के कारण कर्मफल मुझे नहीं देगा। न किसी बदला लेने को वह दण्ड देगा। बड़ा भाई या पिता यदि दण्ड भी देगा तो कल्याण की भावना से देगा। अत: मैं निर्भय हूँ और आपके समक्ष एक बात कहता हूँ कि—

(धामानि वेद भुवनानि विश्वा) आप सब लोक-लोकान्तरों को तथा उन लोकों के नाम स्थान और जन्म को आप अच्छी प्रकार जानते हैं, क्योंकि किसी वस्तु को तीन प्रकार से पूर्णतया जाना जाता है। अर्थात् उस वस्तु का नाम विदित हो और उस वस्तु का स्थान विदित हो और उसकी रचना का स्वरूप विदित हो। आप सब लोकों को तीन प्रकार से जानते हैं कि सब लोकों के नाम क्या हैं तथा वे लोक-लोकान्तर कहां हैं और उनका निर्माण किस प्रकार हुआ है। निर्माण प्रकार जानने से उसका स्वरूपज्ञान और उससे हानि-लाभ आदि सबका ज्ञान हो जाता है। अत: हे परमात्मन्! आप इस सम्पूर्ण विश्व को सर्वात्मना जानते हैं।

परमात्मा-मैं सब लोक-लोकान्तरों को सर्वात्मना जानता हूँ पर इस कहने का अभिप्राय क्या है। क्या तू किसी लोक को जाना चाहता है ?

भक्त-हाँ! **परमात्मा**-अच्छा बताओ कहाँ जाना चाहते हो ? **भक्त**-सुनो—

(यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त) मैं वहाँ जाना चाहता हूँ जहाँ तीसरे धाम में अमृत को भोगते हुए ज्ञानी स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं।

(तृतीये धामन्) 1. दु:खमय सृष्टि-नरक प्रकृति।

2. सुखमय सृष्टि-स्वर्ग-जीव। 3. आनन्दमय सृष्टि-मोक्ष-ब्रह्म। पशु आदि योनि में या मनुष्य योनि में ही जब प्राणी को दु:ख प्राप्त होता है, वह दु:खमय जीवन है।

जब मनुष्य को अतिशय सुख प्राप्त होता है वह सुखमय जीवन है। सुखातिशय के कारण उसे स्वर्ग भी कहते हैं।

इस सांसारिक सुख-दु:ख से रहित जीवात्मा की एक तीसरी स्थिति भी है जब वह प्रभु के आनन्द में विचरण करता है यही जीव का तीसरा धाम है अथवा एक जीवात्म और दूसरी प्रकृति इन दोनों से भिन्न तीसरा परमात्मा है जिससे मुक्त जीव विचरते हैं अत: जीव प्रकृति से विलक्षण यह प्रभु रूप तृतीय धाम है।

(यत्र देवा) **'विद्वांसो हि देवा:'** विद्वानों का ही नाम देव है। तीसरे धाम में वे ही लोग जा सकते हैं जो ज्ञानवान् हैं, क्योंकि—**'ऋते ज्ञानान्न मुक्ति:'** बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं होती। इस तीसरे धाम में अज्ञानियों का वास नहीं है।

(अमृतम्-आनशाना:) जहाँ जन्म-मरण के बन्धन से मनुष्य छूट जाता है उस मोक्ष सुख को प्राप्त करूँ। उस तृतीय धाम प्रभु में विचरूँ। अत: हे प्रभु मैं वहाँ जाना चाहता हूँ जो मेरा अन्तिम लक्ष्य तृतीय धाम है। इस भावना को लिये भक्त प्रभु के सम्मुख उपस्थित हो रहा है। इस प्रकार के भावों को प्रकट करने के लिए ऋषि ने इस मन्त्र की व्याख्या इस प्रकार की है—

(ऋषिभाष्यम्) हे मनुष्यो! (स:) वह परमात्मा (न:) अपने लोगों को (बन्धु:) भ्राता के समान सुखदायक (जनिता) सकल जगत् का उत्पादक (स:) वह (विधाता) सब कामों को पूर्ण करने हारा (विश्वा) सम्पूर्ण (भुवनानि) लोकमात्र और (धामानि) नाम स्थान जन्मों को (वेद) जानता है और यत्र जिस (तृतीये) सांसारिक सुख-दु:ख से रहित नित्यानन्दयुक्त (धामन्) मोक्षस्वरूप धारण करने हारे परमात्मा में (अमृतम्) मोक्ष को (आनशाना:) प्राप्त होके (देवा) विद्वान् लोग (अध्यैरयन्त) स्वेच्छापूर्वक विचरते हैं वही परमात्मा अपना गुरु, आचार्य, राजा और न्यायाधीश है अपने लोग मिलके सदा उसकी भक्ति करें। (संस्कारविधि)

विधाता=सर्वेषां पदार्थानां कर्मफलानां च विधानकर्त्ता। पदार्थ-सब पदार्थों और कर्मफलों का विधान करने वाला है। **तृतीये-जीवप्रकृतिभ्यां विलक्षणे।**

पदार्थ-जीव और प्रकृति से विलक्षण। (वेदभाष्य)

सर्वकल्याण व पुरुषार्थ का हेतु यज्ञ

—आचार्य अभय आर्य, रोहतक

पिछले दिनों हमने 100 गांव में **'यज्ञ'** के माध्यम से आर्यसमाज का प्रचार करनेका निर्णय लिया। जिस समय हम यह लेख लिख रहे हैं, उस समय तक 79 गांव में हम प्रचार कर चुके हैं। यह प्रचार गांव की चौपाल या सार्वजनिक स्थानों पर होने वाले खुले प्रचार थे। इसके विषय में ज्यादा लिखना अभिमान को लिप्त कर देगा और हम इस सत्य से भी परिचित हैं कि यह हमारा अति तुच्छ प्रयास है। लेकिन हम इस अभियान से संतुष्ट हैं, इसमें मिले सहयोग व लोगों की रुचि से संतुष्ट हैं। हम पहले भी ऐसे प्रचार करते रहे हैं व परमात्मा से प्रार्थना है कि आजीवन करते रहें।

एक दिन एक गांव में जब हम यज्ञ करते हुए **'इदन्न मम'** बोल रहे थे, तो आकस्मिक विचार आया कि **'यह मेरा नहीं'**, ऐसा बोलकर बताने की क्या आवश्यकता? क्या यह स्वयं के परोपकार का डंका पीटना नहीं है? सुखद आश्चर्य मंत्र बोलते-बोलते ही समाधान भी हो गया। विचार आया कि यह तो विद्या का प्रकाश है। वेदज्ञान सार्थक है। **'इदन्न मम'** से हमें शिक्षा मिलती है कि **'यज्ञ'** हम कोई व्यक्तिगत बाधा या क्लेश मिटाने के लिए नहीं कर रहे हैं। यह हमारा नित्य कर्म है, जो स्वार्थ रहित व सर्वकल्याणार्थ है।

'यज्ञ' पुरुषार्थ का हेतु है। **'यज्ञ'** के मन्त्रों में उत्तम सन्तान, पशु, विद्या, यश, अन्न-धन प्राप्ति की प्रार्थना की जाती है। ऋषि के अनुसार जैसी प्रार्थना वैसा ही पुरुषार्थ भी करना चाहिए। प्रार्थना संकल्प से जुड़ी है और इनकी सिद्धि पुरुषार्थ से जुड़ी है। अंधविश्वास युक्त प्रार्थना पुरुषार्थ रहित होती है। मेरे शत्रु का नाश हो जाए, कोई काल्पनिक देव हमारा झाड़ू, पोंछा, बर्तन कर दे, हमारे आंगन में धन की वर्षा कर दे। पुरुषार्थ बाहर निकल जाने से ऐसी प्रार्थनाएं औचित्य विहीन हो जाती हैं। ऐसी प्रार्थनाएं करने से कितनों घरों में संस्कारी सन्तान, पशु, सत्य विद्या यश, धर्मयुक्त धन-अन्न रह गया है? अत: सर्वकल्याण व पुरुषार्थ के हेतु **'यज्ञ'** को अवश्य करें।

हम कर्म करने में स्वतन्त्र हैं, इसलिए हम गलती कर सकते हैं।

मनुष्य के जीवन सम्बन्धी मुख्य बातें

❑ लालचन्द चौहान, # 591/12, पंचकूला मो० 9814881501

उत्तम सन्तान-उत्तम सन्तान उत्पन्न करने का हेतु यथोक्त वधू-वर के आधार पर निर्भर करता है। इसके लिए दोनों का प्रसन्नचित्त, आहार-विहार, खान-पान शुद्ध होना अति आवश्यक है। इससे सुशील, विद्वान्, दीर्घायु, तेजस्वी, सुदृढ़ और नीरोग पुत्र उत्पन्न होवे।

गर्भ की पुष्टि होने पर स्त्री कोई मादक मद्य आदि, रेचक हरीतकी आदि, क्षार अतिवर्णादि, अत्यम्ल अर्थात् अधिक खटाई, रूक्ष चणे आदि तीक्ष्ण अधिक लालमिर्ची आदि स्त्री कभी न खावे, किन्तु घृत, दुग्ध, मिष्ट, सोमलता अर्थात् गुडूच्यादि औषधि, चावल, मिष्ट, दधि, गेहूं, उर्द, मूंग, तुअर आदि अन्न और पुष्टिकारक शाक खावे। उसमें ऋतु-ऋतु के मसाले-गर्मी में सफ़ेद इलायची आदि और सर्दी में केशर, कस्तूरी आदि डालकर खाया करे। दूध में सूंठी और ब्रह्मी औषधि का सेवन स्त्री विशेष किया करें जिससे सन्तान अति बुद्धिमान् रोगरहित, शुभ-गुण-कर्म-स्वभाव वाला होवे।

धर्म-न्याय अर्थात् पक्षपात को छोड़कर सत्य का आचरण और असत्य का परित्याग करना है, उसी को धर्म कहते हैं। सनातन धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म, बौद्ध धर्म, इस्लाम धर्म, ईसाई धर्म आदि ये धर्म नहीं हैं, ये मत, पंथ हैं। क्या असत्य कभी धर्म हो सकता है? जो भेद-भाव उत्पन्न करे, क्या वह कभी धर्म हो सकता है? सत्यमेव जयते-जो सत्य का आचरण करने वाला है, वही मनुष्य सदा विजय और सुख को प्राप्त होता है और जो मिथ्या आचरण अर्थात् छोटे कामों को करने वाला है, वह सदा पराजय और दु:ख को प्राप्त होता है। इससे सत्य धर्म का आचरण और असत्य का त्याग करना सब मनुष्यों को उचित है।

महर्षि दयानन्द धर्म की व्याख्या इस प्रकार करते हैं—सत्य ही धर्म है। ईश्वर ने जो वेदों में मनुष्यों के लिए जिसके करने की आज्ञा दी है, वही धर्म और जिसके करने की प्रेरणा नहीं की है, वह अधर्म कहलाता है। परन्तु वह धर्म अर्थयुक्त, अर्थात् अधर्म का आचरण जो अनर्थ है उससे अलग है।

जरा सोचिये—निष्पक्ष, पक्षपात रहित, जात-पात के भेदभाव से रहित, पवित्र मन, पवित्र शुद्ध आत्मा से विचार करे कि क्या जीवहत्या करना, पशुओं की बलि चढ़ाना, स्त्रियों, अबलाओं के साथ दुर्व्यवहार करना, उनके शील को भंग करना, द्वेष-भाव रखना, किसी को ऊँचा-नीचा समझना, क्या ये धर्म के लक्षण हैं?

क्या ईश्वर जो इस सृष्टि का रचने वाला है, सबका स्वामी मालिक है, वह भी अलग-अलग है? सोचिये यदि अलग-अलग ईश्वर होते तो सबने अपनी-अपनी सृष्टि अलग से रची होती, जैसे हर देश के राजा अलग हैं, सब प्रान्तों के राजा अलग हैं, सब शहरों, गांवों के मुखिया, सरपंच आदि अलग-अलग हैं। सबकी सीमाएं अलग-अलग हैं, क्या वैसे ही भगवान् भी आपकी मान्यता के अनुसार अलग-अलग हैं? क्या यह युक्तिसंगत है? सूर्य, चान्द, आकाश, पृथिवी आदि भी सब धर्म जिनको कहते हों, उनके अलग-अलग होने चाहिए थे, परन्तु ऐसा नहीं है।

विश्व में एक सूर्य दिखाई देता है, उसके रचने वाले भी एक हैं, अनेक नहीं। यदि रचने वाला अनेक होते तो सूर्य चान्द भी सबके अनेक होते। जो अलग-अलग ईश्वर मानते हैं, वे अपने ईश्वर को कहें कि उनके लिए अलग से सूर्य चान्द बनायें, देश अलग-अलग देश और प्रान्तों का बंटवारा करते हो या मांग करते हो, इसका बंटवारा भी हो तो होना चाहिए सबके सूर्य-चांद एक क्यों? ईश्वर ने सोचने के लिए बुद्धि दी है। मनुष्य कोई बाल कटवा लेने या रख लेने से या भेशभूषा बदल लेने से बदल नहीं जाता, किसी मनुष्य का खून का रंग बदल नहीं जाता। मनुष्य जाति एक है अलग-अलग नहीं। मनुष्य जाति में मानव और दानव तो हो सकते हैं। सबका धर्म एक है अलग-अलग नहीं,

अच्छे बुरे कर्म कोई और नहीं बल्कि आत्मा स्वयं ही अपनी इच्छा से किया करता है।

कोई ऊँचा-नीचा नहीं, केवल आर्थिक दृष्टि से गरीब-अमीर हो सकता है। मानवता अर्थात् मनुष्यपन से ऊँचा-नीचा नहीं, ऊँचा-नीचा कर्त्तव्य से, विद्वान् सम्माननीय होते हैं। जिस दिन दृढ़ वैराग्य उत्पन्न होवे, उसी दिन चाहे वानप्रस्थ का समय भी पूरा न हुआ हो अथवा वानप्रस्थ आश्रम का अनुष्ठान न करके गृहाश्रम से भी संन्यास ग्रहण करें, क्योंकि संन्यासी में दृढ़ वैराग्य और यथार्थ ज्ञान का होना ही मुख्य कारण है।

ईश्वर प्राप्ति के लिए प्रार्थना-हे सर्वानन्द युक्त जगदीश्वर! जिस आप में सम्पूर्ण समृद्धि और सम्पूर्ण हर्ष, सम्पूर्ण प्रसन्नता और प्रकृष्ट प्रसन्नता स्थित हैं, जिस आप में अभिलाषी पुरुष की सब कामना प्राप्त होती हैं, उसी अपने स्वरूप में परमैश्वर्य के लिए मुझको जन्म-मृत्यु के दुःख से रहित मोक्षप्राप्ति युक्त, कि जिससे मुक्ति का समय के मध्य में संसार में नहीं आना पड़ता, उस मुक्ति की प्राप्ति वाला कीजिए तथा सब दुःख निवारण के लिए आप मुझ पर करुणावृत्ति कीजिए।

संन्यासी को उपदेश-हे पूर्ण विद्वान् संन्यासी लोगो! तुम जैसे इस आकाश में गुप्त स्वयं प्रकाशस्वरूप सूर्यादि का प्रकाशक परमात्मा है, उसको चारों ओर से अपने आत्मा में धारण करो और आनन्दित होओ, वैसे जो सब भुवनस्य गृहस्थादि मनुष्य हैं, उनका सदा विद्या और उपदेश से संयुक्त किया करो, यही तुम्हारा परम धर्म है।

जो संन्यास ग्रहण करे, उस धर्माचरण, सत्योपदेश, योगाभ्यास, शम, दम, शान्ति, सुशीलादि, विद्याविज्ञानादि शुभ गुण-कर्म-स्वभावों से सहित, परमात्मा को अपना सहायक मानकर, अत्यन्त पुरुषार्थ से शरीर, प्राण, मन, इन्द्रियादि को अशुद्ध व्यवहार से हटा शुद्ध व्यवहार में चला के, पक्षपात, कपट, अधर्म, व्यवहारों को छोड़, अन्य के दोष पढ़ाने और उपदेश से छुड़ाकर, स्वयं आनन्दित होके, सब मनुष्यों को आनन्द पहुंचाता रहे।

संन्यासी परमात्मा के गुण-कर्म-स्वभाव को समझे-

जो संन्यासी परमात्मा के गुण-कर्म और स्वभाव को जान लेता है, और स्वयं के गुण-कर्म-स्वभाव परमात्मा के अनुरूप बना लेता है, वही संन्यासी कहलाता है।

परमेश्वर कैसा है? वह परमेश्वर सूर्यादि लोकों को उत्पन्न करने वाला और सूर्यादि लोकों में व्याप्त और पूर्ण है कि जिसके प्रताप से सूर्य तपता है। उस तपने से वर्षा, वर्षा से औषधि-वनस्पति की उत्पत्ति, उससे अन्न, अन्न से प्राण, प्राण से बल, बल से तप अर्थात् प्राणायाम, योगाभ्यास, उससे श्रद्धा=सत्य धारण में प्रीति, उससे बुद्धि, बुद्धि से विचार शक्ति, उससे ज्ञान, ज्ञान से शान्ति, शान्ति से चेतना, चेतना से स्मृति, स्मृति से पूर्वापर का ज्ञान, उससे विज्ञान और विज्ञान से आत्मा को संन्यासी, जानता और जनाता है। इसलिये अन्नदान श्रेष्ठ, जिससे प्राण, प्राण से बल, विज्ञानादि होते हैं। जो प्राणों का आत्मा जिससे यह सब जगत् ओतप्रोत हो रहा है, यह सब जगत् का कर्त्ता, पूर्व कल्प और उत्तरकल्प में भी जगत् को बनाता है।

उसके जानने की इच्छा से उसको जानकर हे संन्यासी! तू पुनः-पुनः मृत्यु को प्राप्त मत हो, किन्तु मुक्ति से पूर्ण सुख को प्राप्त हो। इसलिये सब तपों का तप, सबसे पृथक् उत्तम संन्यास को कहते हैं। हे परमेश्वर! जो तू सब में वास करता हुआ विभु है, तू प्राण का प्राण, सबका संधान करने हारा, विश्व का स्रष्टा, कर्त्ता, सूर्यादि का तेजदाता है। तू ही अग्नि से तेजस्वी, तू ही विधाता, तू ही सूर्य का कर्त्ता, तू ही चन्द्रमा के प्रकाश का प्रकाशक है। वह सबसे बड़ा पूजनीय देव है। (ओ३म्) इस मन्त्र का मन से उच्चारण करके परमात्मा में आत्मा को युक्त करे। ओ३म्-अ+उ+म्=तीन ईश्वर, जीव, प्रकृति। यदि जीव प्रकृति के साथ लगाव रखेगा तो जन्म-मृत्यु के चक्र में पड़ा रहेगा और यदि जीव ईश्वर के साथ प्रकृति का मोह त्याग कर रहेगा तो अमर पद को प्राप्त होगा। जी+प्रकृति=दुःख, ईश्वर+जीव=सुख।

निर्णय आपका, आप क्या चाहते हैं? प्रकृति का भोग त्याग भावना से किया जाय तो भौतिक सुख अवश्य मिलता है, प्रकृति के भोग के बगैर जीवन यापन भी नहीं होता यह भी कटु सत्य है। प्रकृति का भोग करते हुए ईश्वर की आज्ञा का पालन अवश्य करें।

ईश्वर मनुष्यों को अपनी इच्छा से जैसा चाहता है, वैसा फल नहीं दे देता है।

ब्रज के तीन वीर जाट योद्धा

❑ आनन्ददेव शास्त्री, पूर्व प्रवक्ता, दिल्ली सरकार

औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीति से पूर्व ब्रज के जाट शान्तिपूर्वक कृषि करके अपना जीवन व्यतीत करते थे। लेकिन औरंगजेब की कट्टर धार्मिक नीतियों का उसके अधिकारियों ने खुलकर प्रयोग किया। मथुरा के फौजदार अब्दुल नवी खां ने बड़े उत्साह से मूर्तिपूजा का अन्त करने की बादशाह की नीति का पालन किया। उसने मथुरा में हिन्दू मन्दिरों के स्थान पर शहर के बीच जामा मस्जिद बनवाई। तत्पश्चात् उसने केशवराम के मन्दिर कोदारा द्वारा प्रदत्त नक्काशीदार पत्थर का जंगला वहां से हटा दिया। उसकी इस नीति से स्वतन्त्रता की भावना से जीने वाले जाटों को विद्रोह से भर दिया तथा उनका नेतृत्व तिलपत के जाट गोकला ने संभाला तथा गांव-गांव घूमकर मुगलों के विरुद्ध जाटों का एक संगठन बनाया। तब 1679 ई० में गोकला जाट के नेतृत्व में किसानों ने मुगलों के विरुद्ध संग्राम छेड़ दिया, जो कोई 52 वर्ष तक निरन्तर चलता रहा। उसे दबाने के लिए मथुरा का फौजदार अब्दुल नवी खां बसरा गांव की तरफ चला। परन्तु 10 मई के लगभग वह इस युद्ध में गोली से मारा गया। गोकला ने सादाबाद का परगना लूट लिया। धीरे-धीरे वह जाट विद्रोह पड़ोसी राज्य आगरा में भी फैल गया।

अब्दुल नवी खां के यूं मारे जाने पर औरंगजेब ने जाटों के दमन के लिए सफकिशन खां तथा उसके बाद सैयद हसन अली खां को मथुरा का फौजदार नियुक्त किया। फिर भी मथुरा में शान्ति स्थापित न हो सकी। सफकिशन खां के असफल होने पर सैय्यद हसन अली खां अपने सहयोगी शेखरजी उद्दीन खां के साथ विशाल शाही सेना के साथ विद्रोही नेता गोकला जाट के दमन में लग गया। जाट नेता भी अपनी 20 हजार किसान सेना के साथ सामना करने के लिए आगे बढ़ा। अत: 1670 ई० के जनवरी के प्रारम्भ में, तिलपत से 20 मील दूर एक स्थान पर दोनों सेनाओं के मध्य भयंकर युद्ध हुआ जिसमें बहुत मारकाट के बाद हसन अली खां ने गोकला को पराजित कर दिया। गोकला भागकर तिलपत चला गया। तब शाही सेना ने तिलपत को जा घेरा। तीन दिन के घमासान युद्ध के बाद शाही सेना तिलपत पर अधिकार करने में सफल हो सकी।

इस युद्ध में चार हजार शाही सैनिक तथा पांच हजार जाट सैनिक मारे गए। जाट नेता अपने कुटुम्बियों तथा सात हजार साथियों सहित बन्दी बना लिया गया। बन्दी गोकला जाट को बादशाह के पास भेज दिया गया। गोकला के लड़के को मुसलमान बनाकर उसका नाम फाजिल खां रखा तथा वह जवाहर खां को सौंप दिया, जिसकी देखरेख में उसका पालन हुआ। उसकी एक लड़की को मुसलमान बनाकर शाहकुल कोल के साथ उसका निकाह कर दिया। औरंगजेब ने कोतवाली (आगरा) के सामने चबूतरे पर खड़ा करके गोकला का एक-एक अंग काटकर निर्मम हत्या करवा दी। हसन अली के इन प्रयत्नों का अच्छा परिणाम निकला। प्रदेश में शान्ति स्थापित हो गई, परन्तु कुछ ही समय के लिए। 1681 ई० में औरंगजेब दक्षिण में चला गया तथा वहीं के युद्धों में उलझ गया, जो उसकी मृत्यु पर्यन्त चले। अत: नर्मदा के उत्तर के सारे समृद्ध इलाके साधारण योग्यता वाले अमीरों को सौंपे गये तथा उनके साथ सेना भी बहुत थोड़ी रक्खी गई। इसके अतिरिक्त व्यापारियों के माल से लदी हुई गाड़ियां, सेना की युद्ध सामग्री तथा अमीरों के माल असबाव को लेकर सुदूर दक्षिण को जाने वाले लम्बे-लम्बे काफिले उत्तर भारत के मार्गों से लगातार गुजरते रहते थे। दिल्ली से आगरा धौलपुर तथा आगे मालवा में होकर दक्षिण को जाने वाली शाही सड़क जाटों के प्रदेश से होकर गुजरती थी। इन वीर सशक्त तथा मेहनती जाटों को सशक्त सेना ही लूट से रोक सकती थी, छोटी-छोटी सैनिक टुकड़ियां नहीं।

राजाराम-औरंगजेब के यों दक्षिण चले जाने से उत्तरी भारत में जाटों को जो मौका मिला, उससे गोकला के खून का बदला लेने के लिये 1685 में सनसनी के जमींदार भज्जा के पुत्र राजाराम ने जाट संगठन की बागडोर संभाली। उसने सौगर के जमींदार रामचेहरा को भी अपना मित्र बना लिया। अब दोनों ने मिलकर व्यवस्थित सेना तैयार की। सड़क रास्तों से बहुत दूर उन्होंने कई छोटी-छोटी गढ़ियां बना ली थी, इन गढ़ियों के चारों तरफ मिट्टी की मोटी-मोटी दीवों बनाकर उन्हें सुदृढ़ बना लिया गया था, जिससे दीवारों पर

गोलाबारी का कोई असर नहीं हो पाता था। तब उन्होंने आगरा-दिल्ली, आगरा-ग्वालियर तथा मालवा को जाने वाले शाही मार्गों की तरफ कूच किया तथा तीव्र गति से लूटमार प्रारम्भ कर दी। ईश्वरदास के अनुसार-'इनकी इस लूटमार के कारण आने जाने के मार्ग इतने बंद हो गये कि पक्षियों को भी अपने पंख फड़फड़ाने का कोई स्थान नहीं बचा था।' आगरा का सूबेदार सफीखां इन उपद्रवों को दबा न सका तथा इस जिले के कई गाँव जाटों ने लूटे। कुछ दिनों के बाद राजाराम ने धोलपुर के पास तुर्रानी सेनानायक अगरखां पर आक्रमण कर उसे मार डाला, जो बीजापुर के पास पड़े शाही पड़ाव से चलकर काबुल जा रहा था। राजाराम की इस धृष्टतापूर्ण सफलता से औरंगजेब क्षुब्ध हो गया तथा दिसम्बर 1687 ई० में उसने जाटों के विद्रोह को दमन के लिये, शाहजादा बेदारबख्त को सेना का प्रधान सेनापति बनाकर भेजा। परन्तु शाहजादा के पहुंचने से पहले ही कई एक घटनाएं घट चुकी थीं। राजाराम ने हैदराबाद के मीर इब्राहिम पर आक्रमण किया, जो कि पंजाब की सूबेदारी संभालने जा रहा था। तदनन्तर उसने सिकन्दरा में बने हुए अकबर के मकबरे को लूटा तथा ईश्वरदास के अनुसार-'सम्पूर्ण मकबरे को तोड़-फोड़कर, वहां के कालीन सोने चांदी के बर्तन तथा कंदील आदि सब कुछ उठाकर ले गया।' मनूची भी लिखता है-'वहां जड़े हुए बहुमूल्य रत्न तथा सोने-चांदी के बर्तन लूटे तथा जिसे वे उठाकर नहीं ले जा सकते थे उसे नष्ट-भ्रष्ट कर डाला।' मकबरे को खोदकर अकबर की हड्डियों को भी बाहर निकाला तथा क्रुद्ध हो आग में डालकर उन्हें भी जला दिया तथा मकबरे में फूस डालकर उसे आग के हवाले कर दिया।

जाटों के इन कृत्यों ने शाहजादा को भयभीत कर दिया। अतः मथुरा पहुँचकर भी उसने जाटों पर कोई आक्रमण नहीं किया तथा औरंगजेब से और सैनिक सहायता भेजने के लिए आग्रह करता रहा। इसी समय 1688 ई० में चौहानों तथा शेखावत राजपूतों के मध्य युद्ध आरम्भ हो गया तथा राजाराम भी इस युद्ध में चौहानों की सहायता के लिए पहुंचा। जब दोनों पक्षों में युद्ध चल रहा था, उसी समय विरोधी दल वालों ने राजाराम को 4 जुलाई 1688 ई० के दिन गोली से मार दिया।

किन्तु राजाराम की मृत्यु के बाद भी यह जाट विद्रोह शान्त नहीं हुआ, परन्तु कुशल नेतृत्व के अभाव में विद्रोही जाट किसानों को तब कुछ समय के लिए अज्ञातवास अवश्य करना पड़ा। जाटों का पूर्ण दमन करने के लिए आमेर के नए कछवाहा राजा बिशनसिंह को औरंगजेब ने मथुरा का फौजदार नियुक्त किया तथा सनसनी का प्रदेश भी उसे जागीर में दे दिया। कछवाहा राजा बिशनसिंह एक बड़ी शाही सेना के साथ सनसनी की ओर रवाना हुआ तथा सनसनी से 10 मील पहले उसने सेना का पड़ाव डाला। लेकिन जाट प्रदेश सनसनी पर अधिकार करना सरल कार्य न था। अब जाटों ने मुगलों को परास्त करने के लिए नई युद्धनीति अपनाई। उन्होंने अब छापामार युद्ध प्रारम्भ कर दिया तथा अवसर देखकर शाही सेना पर वे रात्रि में हमले करने लगे। यही नहीं उनके इस प्रकार के युद्ध से शाही सेना में रसद पहुंचना तथा तालाब से पानी भर ले जाना भी कठिन हो गया। ईश्वरदास के अनुसार-'ऐसी परिस्थिति हो गई थी कि व्यक्ति भूख से निढाल हो गये थे तथा घास के अभाव में पशु ऐसे अशक्त हो गये थे कि उनके लिए जमीन से उठना भी कठिन हो गया था।' तथापि राजा बिशनसिंह सनसनी पर डेरा डाले दृढ़ता से डटा रहा। उसके साहस तथा धैर्य से प्रसन्न हो विजयलक्षी ने उसी के गले में माला डाली। उसने सुरंग से किले की एक ओर की दीवार को उड़ा दिया, तब दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ। विजय की आशा छोड़ जाट सेना जंगलों में भाग गई। इस युद्ध में 1500 जाट सैनिक मारे गये या घायल हुए तथा 200 शाही सैनिक मारे गए एवं 700 राजपूत मारे गये या घायल हुए। अगले वर्ष अचानक आक्रमण कर राजा बिशनसिंह ने 21 मई 1691 ई० को जाटों में दूसरे सुदृढ़ दुर्ग सौगर पर भी अधिकार कर लिया।

चूडामन-इतने पर भी जाटों का पूर्ण दमन करना राजा बिशनसिंह के लिये असंभव हो गया, क्योंकि उधर जाटों के सुयोग्य नेता के रूप में चूडामन जाट उभरने लगा, जिसने कालान्तर में जाट शक्ति को चरमसीमा पर पहुंचा दिया। चूडामन ने गांव-गांव घूमकर सेना का संगठन करना प्रारम्भ किया। कुछ ही समय में उसने 500 घुड़सवारों तथा 1000 पैदल सेना एकत्र कर ली। नन्दा जाट भी 1000 घुड़सवारों के साथ उससे मिल गया। सोंख व सोगर के जाट भी उससे आ मिले। इस प्रकार उसने अपनी वाक्पटुता तथा व्यक्तित्व

के सहारे विद्रोहियों का दृढ़ संगठन बना लिया। तदनन्तर सनसनी के मुगल किलेदार पर आक्रमण किया। मुगल किलेदार युद्ध में मारा गया। यों 1707 ई० में चूडामन का अधिकार हो गया। तब तो उसने शाही परगनों में लूटमार आरम्भ कर दी। दक्षिण में औरंगजेब के पास चूडामन के इन उत्पातों के समाचार बराबर पहुंचने लगे। तब औरंगजेब ने चूडामन को दबाने के लिए सैनिक कार्यवाहियां भी कीं, लेकिन अपने जीवन काल में वह जाटों को दबा न सका।

1707 ई० में औरंगजेब की मृत्यु होने पर, उसके पुत्रों आजम तथा मुअज्जम में जब उत्तराधिकार का संघर्ष आरम्भ हो गया तब चूडामन भी उस युद्ध में आजम की सेना में सम्मिलित हो गया तथा जब आजम की पराजय के लक्षण दिख पड़े तब उसने आजम के डेरे पर धावा बोल दिया तथा उसका सारा सामान लूट लिया। मुअज्जम जब बहादुरशाह के नाम से गद्दी पर बैठा तो उसने चूडामन की शक्ति को जानकर उसे 1500 जाट तथा 500 सवार का मनसब दिया तथा उसे एक साम्राज्य का जागीदार बना दिया। 17 फरवरी 1712 ई० को बहादुरशाह की मृत्यु हुई तथा तब उसका उत्तराधिकारी जहांदार शाह अयोग्य निकला। अतः डॉ० कानूनगो के अनुसार एक विजेता विद्रोही जिसने अपने पौरुष तथा बल से साम्राज्य की सीमाओं में जागीर बनाई तथा अनेक गांव अपने कब्जे में कर लिये। वह बलहीन जहांदारशाह के राज्य में कैसे भयभीत हो सकता था। लाहौर के गृहयुद्ध से लौटकर उसने अपनी सैनिक शक्ति को सुदृढ़ किया तथा पुनः लूटमार शुरू कर दी। दिल्ली से जयपुर की सीमा तक मेवात से चम्बल तक सभी इलाकों में लूटमार मचा दी। इसी समय फारुख सियर जहांदारशाह के विरोध में अपनी सेना के साथ जब पटना से रवाना हुआ तब भयभीत जहांदारशाह ने चूडामन को अपने सहयोग के लिए आमन्त्रित किया। अतः 10 जनवरी, 1713 ई० के गृहयुद्ध में वह सम्मिलित हुआ तथा जब युद्ध प्रचण्ड रूप में था तब उसने निःसंकोच दोनों पक्षों को लूटा तथा लूट के माल के साथ अपने निवास पर लौटा।

फरुखसियर ने गद्दी पर बैठने के बाद जाट शक्ति को दबाने के लिए मार्च, 1713 ई० में राजा छबीलराम को आगरा का सूबेदार बनाकर भेजा। जाट शक्ति के दमन में असफल होने पर छबीलराम के स्थान पर खानदोराय समशुद्दौला की नियुक्ति की गई, जिसने जाटों के साथ मित्रता बनाए रखना ही उचित समझा तथा उसी के प्रयत्नों से 400 सवारों के साथ अक्तूबर 1713 ई० में दिल्ली में सम्राट के समक्ष उपस्थित हुआ। सम्राट ने जाट सरदार को बहादुरखां की उपाधि से विभूषित किया तथा राव का पद देकर दिल्ली के उत्तर में बारापूला से लेकर दक्षिण में चम्बल तक, पूर्व में आगरा से लेकर पश्चिम में आमेर राज्य की सीमा तक भी राहगिरी का भार सौंपा। राहगिरी का अधिकार देकर बादशाह ने उसकी लूटपाट को कानूनी समर्थन दे दिया। कानूनगो के शब्दों में, 'भेड़िया को भेड़ों का रखवाला बना दिया।' कुछ समय बाद चूडामन को अखेगढ़, हैलक, नगद आदि की कई जागीरें भी उसे मिल गई लेकिन चूडामन उससे सन्तुष्ट न हुआ तथा वह अन्य मुस्लिम जागीरदारों के क्षेत्रों में हस्तक्षेप करने लगा। न्याय से मनमानी वसूली तथा कुछ क्षेत्रों में लूटमार भी प्रारम्भ कर दी। चूडामन के उपद्रव को देख बादशाह ने आमेर नरेश सवाई जयसिंह को चूडामन के विरुद्ध अभियान चलाने का आदेश दिया। तब जयसिंह तथा फरुखसियर भी चूडामन का दमन नहीं कर सके। किन्तु कुछ समय बाद चूडामन तथा बदनसिंह में मतभेद हो जाने से बदनसिंह आमेर नरेश जयसिंह की शरण में चला गया। तब उस गृह कलह से खिन्न होकर चूडामन ने आत्महत्या कर ली। तब जयसिंह ने बदनसिंह की सलाह पर थूण पर आक्रमण किया। मोहकम सिंह (चूडामन का भतीजा) भाग निकला तथा 1721 ई० में थूण पर जयसिंह का अधिकार हो गया। जयसिंह थूण गढ़ी को पूर्ण रूप से नष्ट कर दिया।

चूडामन में जाटों जैसी दृढ़ता, मराठों जैसी चतुराई तथा राजनैतिक दूरदर्शिता कूट-कूटकर भरी हुई थी। कार्य कुशलता तथा अवसरवादिता ही उसके जीवन के प्रमुख अंग थे। वह राजनीति का प्रयोग केवल राजनीति के लिए ही करता था, मानवीय भावनाओं के लिए नहीं। इसी के सहारे उसने औरंगजेब जैसे बादशाह को नाकों चने चबवाये। वही व्यक्ति था जिसने अठारवीं शताब्दी में शत्रुओं का मानमर्दन कर उत्तरी भारत में जाट शक्ति का सितारा भारत के राजनैतिक आकाश में जगमगाया था।

सम्पर्क सूत्र-111/19, आर्यनगर, झज्जर
मो० 9996227377

सुख को पाने और दुःख को हटाने के लिए जो चेष्टा विशेष की जाती है, वही कर्म कहलाता है।

"लौटो वेदों की ओर" अभियान सिरसा की कुछ झलकियां।

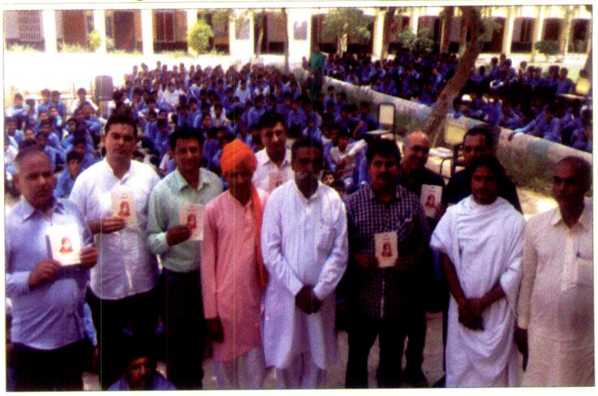

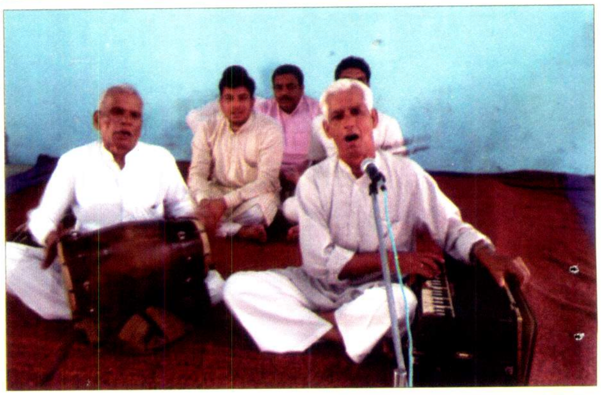

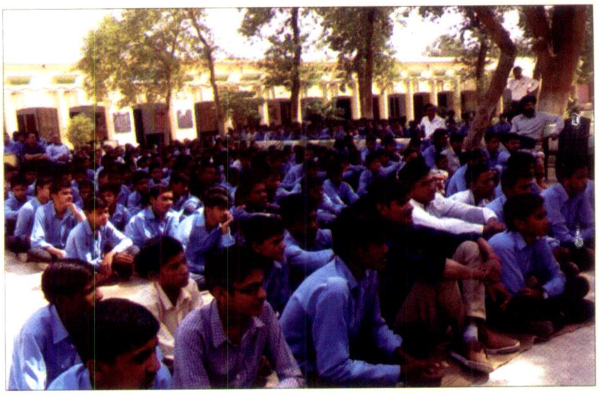

"लौटो वेदों की ओर" अभियान सिरसा की कुछ झलकियां।

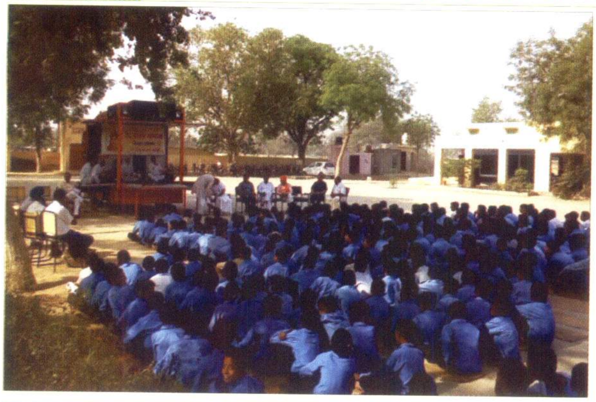

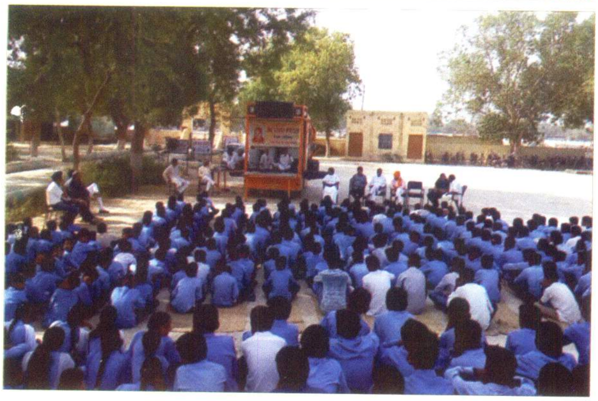

क्रोध करने से बुद्धि का नाश होता है, तथा निर्णय लेने की क्षमता घटती है।

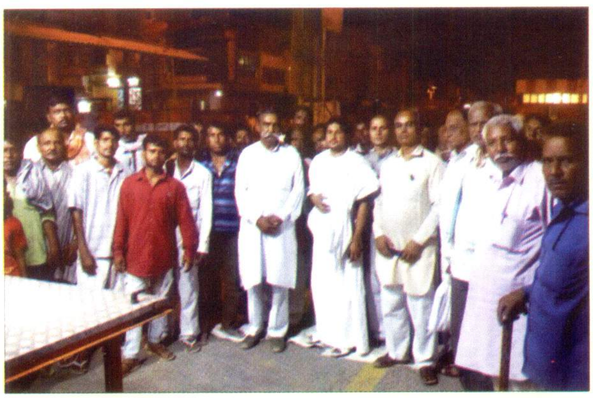

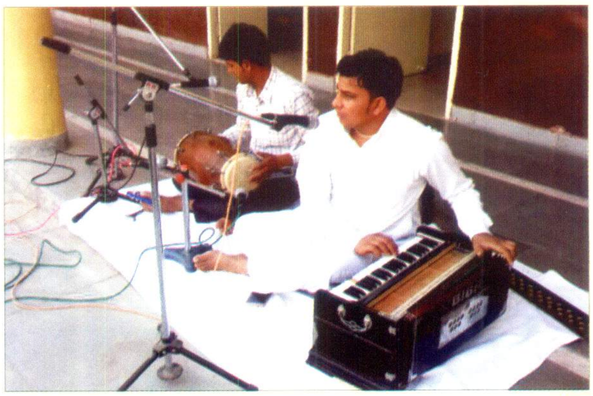

ओ३म्

सांख्य दर्शन का अध्यापन

पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक द्वारा स्थापित दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़, की शाखा दर्शन योग महाविद्यालय, महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर रोहतक में विगत लगभग देढ़ वर्ष से नियमित रूप से प्रातः यज्ञ, वेदपाठ, वेद प्रवचन, कक्षा के रूप में क्रियात्मक योग, संस्कृत भाषा का प्रशिक्षण, आर्योछ्देश्यरत्नमाला, व्यवहारभानु, स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश,स्थूल रुपेण योगदर्शन, सांख्यदर्शन व सत्यार्थ प्रकाश आदि ऋषिकृत ग्रन्थों का अध्यापन कराया जा रहा है। आगे वैशाख कृ. 06/2074 तदनुसार 17 अप्रैल 2017 से स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक के द्वारा स्वामी ब्रह्ममुनि जी कृत संस्कृत भाष्य सहित सांख्य दर्शन का अध्यापन कराया जायोगा। स्वस्थ, समर्थ, अनुशासनप्रिय, विद्या इच्छुक विद्यार्थी तथा नवीन विद्यार्थी प्रवेश के लिए निवेदन व संपर्क करें।

प्रवेश के लिए योग्यता

केवल ब्रह्मचारी (पुरुषों) के लिए। आयु 18 वर्ष से अधिक हो।

शैक्षणिक योग्यता

न्यूनतम 12 वीं (शास्त्री व आचार्य श्रेणी को प्राथमिकता)

विशेषताएं

वैदिक दर्शनों के संस्कृत भाष्य सहित अध्यापन के साथ साथ 11 उपनिषद्, महर्षि दयानन्द कृत कुछ ग्रंथ, वेद भाष्य के चुने हुए कुछ अध्याय, संस्कृत भाषा का प्रशिक्षण, स्वयं के धार्मिक व आध्यात्मिक जीवन के निर्माण हेतु प्रतिदिन ईश्वरोपासना, यज्ञ, वेदपाठ, वेदस्वाध्याय, आत्मनिरीक्षण व निदिध्यासन अभिन्न अंग हैं। क्रियात्मक योग प्रशिक्षण के माध्यम से विवेक वैराग्य, मनोनियंत्रण, यम नियम, ध्यान-समाधि आदि सूक्ष्म विषयों का प्रशिक्षण दिया जाएगा। आध्यात्मिक उन्नति के लिए 4-5 घंटे मौन पालन का अवसर रहेगा।

सुविधाएं

प्रत्येक ब्रह्मचारी को पक्षपातरहित आवास-भोजन, बिस्तर-वस्त्र, घी-दूध, फल-पुस्तकादि, वस्तुवें निःशुल्क प्राप्त होंगी।

सम्पर्क हेतु पता

आचार्य जी,

दर्शन योग महाविद्यालय, महात्मा प्रभु आश्रित कुटिया, सुन्दरपुर रोहतक (हरियाणा) 124001

चलभाष -

आचार्य नवानन्द जी आर्य - 7027026175, स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक - 7027026176, श्री निगम मुनि जी - 9355674547

मनुष्य जीवन के उत्थान का एक सरल उपाय

❑ मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

संसार में अनेक प्रकार के प्राणी हैं जिनमें से एक मनुष्य है। मनुष्य उसे कहते हैं जिसमें मनन करने का गुण व सामर्थ्य है। मनन करना सत्य व असत्य के विवेक वा निर्णय करने के लिए होता है। मनुष्य के पास अन्य प्राणियों की तुलना में उनसे कहीं अधिक विकसित बुद्धि तत्त्व व बोलने के लिए वाणी होती है। दो हाथ परमात्मा ने मनुष्य शरीर के साथ दिये हैं जिससे यह आत्मा, मन, मस्तिष्क व बुद्धि से निर्णीत विचारों को फलीभूत व सफल कर सकता है। हम जानते हैं कि मनुष्य का जन्म वा उत्पत्ति माता पिता के द्वारा होती है। जन्म के समय सन्तान एक शिशु के रूप में होती है जो रो तो सकती है परन्तु अपने कार्य स्वयं नहीं कर सकती। उसे अपने माता-पिता व संबंधियों पर निर्भर होना पड़ता है। आरम्भ में माता के दूध व कुछ समय बाद दुग्ध, फल व अन्न के द्वारा उसके शरीर का विकास होता है। समय बीतने के साथ वह उठना बैठना व चलना आरम्भ करता है। माता-पिता की जो भाषा वह सुनता रहता है, उसी को धीरे-धीरे बोलना आरम्भ करता है और कुछ काल बाद उसे अच्छी तरह से बोलना भी आरम्भ कर देता है। उसकी बुद्धि भी अब कई विवेकपूर्ण बातें करने लगती है। कई बार तो वह ऐसे उत्तर देते हैं कि जिसका अनुमान बड़े भी नहीं कर सकते। इस मन व बुद्धि को ज्ञान से आलोकित करने के लिए उसे शिक्षित करने की आवश्यकता होती है। माता अपनी सन्तानों की पहली गुरु होती है। जब वह तीन वर्ष से अधिक आयु का हो जाता है तो माता-पिता उसे स्कूल या पाठशाला भेजना आरम्भ कर देते हैं जिससे वह कुछ अच्छे संस्कार प्राप्त करने के साथ पद्य व गद्य व अक्षर ज्ञान प्राप्त कर सके। यह उसके अध्ययन का आरम्भ काल कहा जा सकता है जो प्राय: कक्षा दस, बारह, चैदह-पन्द्रह अथवा एम.ए. सहित पी.एच-डी. वा डाक्टर, इंजीनियर, प्रबन्धन, शोध आदि उपाधियों से अलंकृत होता है। बाल्यकाल में बच्चा धारा प्रवाह मातृभाषा बोलता तो है, इसके साथ ही वह अपने हित व अहित कुछ कुछ समझने लगता है। शिक्षा पूरी कर वह अपनी आजीविका अर्जित करने की योग्यता भी प्राप्त कर लेता है। ऐसा होने पर भी अभी तक उसे न तो ईश्वर के सत्य स्वरूप का ज्ञान होता है, न उपासना की विधि और न यज्ञ आदि करना ही आता है। माता-पिता के प्रति कर्तव्यों का भी यथोचित ज्ञान अधिंकाश युवाओं को नहीं होता। इसके लिए उसे अन्य ग्रन्थों व विद्वानों की शरण में जाना होता है जहां उसे इन विषयों से संबंधित सत्य ज्ञान प्राप्त हो सके।

मनुष्य जो घरेलु व स्कूली शिक्षा प्राप्त करता है उससे अपने जीवन के उद्देश्य व उसकी प्राप्ति के साधनों का ज्ञान व अभ्यास उसे नहीं होता। अधिकांश मनुष्यों का सारा जीवन व्यतीत हो जाता है और वह जीवन के उद्देश्य के जानने व अपना इहलोक व परलोक संवारने वाले कर्तव्यों से वंचित ही रहते हैं जिसका हानिकारक परिणाम उनके परजन्म पर पड़ना निश्चित होता है। इसके लिए यह आवश्यक है कि माता-पिता अपनी सन्तानों को बचपन से ही जीवन के वास्तविक उद्देश्य सहित उसे आर्यों के धार्मिक ग्रन्थों वेद, उपनिषद्, दर्शन, मनुस्मृति सहित सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु, उपदेशमंजरी आदि का परिचय दें। यदि इन सबका सार भी बच्चों को बता दिया जाये तो उससे उनकी अविद्या घट सकती है। इसके लिए हमें यह उपयुक्त लगता है कि सभी घरों में माता-पिता व परिवार के सभी सदस्य मिलकर सन्ध्या व अग्निहोत्र किया करें। प्रत्येक रविवार को सम्भव हो तो आर्यसमाज के सत्संग में अवश्य जाया करें। आर्यसमाज के मंत्री जी से वह निवेदन करें कि प्रत्येक सप्ताह अच्छे विद्वानों को बुलाकर उनका प्रवचन करायें। इससे उन्हें पर्याप्त लाभ होगा और आर्यसमाज के सत्संगों में जाने में उन्हें उत्साह उत्पन्न हुआ करेगा। यह सब करने पर भी स्वाध्याय से जो लाभ होता है उसकी पूर्ति इन सभी साधनों से नहीं होती। इसके लिए हमें यह उचित

मन, वाणी तथा शरीर से जो विशेष चेष्टा होगी, वह फल देने वाला कर्म है।

प्रतीत होता है कि सभी आर्य परिवारों में प्रति दिवस सायंकाल व रात्रि निर्धारित समय पर सत्यार्थप्रकाश का पाठ हुआ करे। इसे यदि नित्यकर्म में सम्मिलित कर लिया जाये और इसे भोजन की भांति अनिवार्य परम्परा बना दें तो यह जीवन उन्नति का एक बहुत बड़ा साधन बन सकता है। परिवार का यदि कोई सदस्य किसी कारणवश नगर व ग्राम से बाहर जाये तो वह सत्यार्थप्रकाश अपने साथ ले जाये और जब उसे सुविधा हो उस समय वह सत्यार्थप्रकाश का पाठ अवश्य करे। इससे उसके सत्यार्थप्रकाश के पाठ में अनभ्यास के कारण किसी प्रकार की भी रुकावट नहीं आयेगी। यदि बच्चे व युवा घर में सन्ध्योपासन, अग्निहोत्र व सत्यार्थ प्रकाश के स्वाध्याय तक ही सीमित रहें तो हमें लगता है कि इस नियम का पालन करने से मनुष्य के जीवन का बहुविध कल्याण हो सकता है। इससे उस मनुष्य के भावी जीवन के प्रारब्ध में गुणात्मक वृद्धि होने से परजन्म में इसका लाभ होगा। यह कोई कठिन कार्य नही है। हम यह भी अनुभव करते हैं कि जब मनुष्य सन्ध्योपासना, यज्ञ व सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय करेगा तो उन्हें इतर कर्तव्यों का बोध भी साथ साथ होता जायेगा जिसके विषय में उसे कुछ बताने की आवश्यकता नहीं है। अन्य सभी कर्तव्यों को भी वह स्वयं यथासमय करता रहेगा जिससे कि उसे इस जन्म व परजन्म की जीवन की उन्नति का लाभ होगा।

मनुष्य जीवन में संगतिकरण का भी महत्त्व है। अच्छे लोगों की संगति का अच्छा परिणाम होता है और बुरे लोगों की संगति से मनुष्य का जीवन व भविष्य पतन को प्राप्त हो जाता है। सत्यार्थप्रकाश पढ़कर जब हम सन्ध्योपासना व स्वाध्याय करते हैं तो हमारी संगति अध्ययन किये जा रहे विषय सहित ईश्वर के साथ होती है। ईश्वर संसार के सब गुणों का अधिपति व स्वामी होने सहित सभी अवगुणों से सर्वथा मुक्त है। संगति से ध्येय के गुण व अवगुणों का संचार मनुष्य के जीवन व आत्मा आदि अन्त:करण चतुष्टय में होता है। अत: ईश्वरोपासना, यज्ञ एवं सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन से ईश्वर व ऋषि दयानन्द जी की संगति का लाभ भी मिलता है। अब यदि हमारा ऐसा जीवन होगा तो वह उन्नत व प्रतिष्ठित जीवन ही होगा। यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन में सत्यार्थप्रकाश के अध्ययन का व्रत लेता है तो वह तीन महीनों में तो सत्यार्थप्रकाश का एक बार अध्ययन पूर्ण कर सकता है। कोई व्यक्ति एक माह व कोई इससे कुछ अधिक समय में भी कर सकता है। इस प्रकार एक वर्ष में न्यूनतम चार बार व उससे भी अधिक बार सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन हो जायेगा। इससे मनुष्य की जो आत्मिक, बौद्धिक व मानसिक स्थिति बनेगी उसका चिन्तन कर हम कह सकते हैं कि वह सत्यार्थप्रकाश का अधिकारी विद्वान् हो सकता है। उसकी तुलना में किसी मत-मतान्तर का कोई विद्वान् ठहर नहीं सकता। हमें स्मरण है कि हमने एक दिन में 10 घंटों से भी अधिक अध्ययन करने का अभ्यास किया। यदि इस गति से कोई सत्यार्थप्रकाश पढ़ेगा तो एक वर्ष में ही वह सत्यार्थ प्रकाश पर बहुत अधिक नहीं तो यथोचित अधिकार प्राप्त कर ही सकता है। अत: मनुष्य जीवन को अग्रणीय व श्रेष्ठ बनाने के लिए मनुष्य तीन व्रत सन्ध्या करना, यज्ञ-अग्निहोत्र करना व सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करना तो कम से कम ले ही सकते हैं। हमें यह भी अनुभव होता है कि ऐसा करने से मनुष्य की भौतिक उन्नति व आध्यात्मिक उन्नति दोनों होंगी और वह समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति बन सकता है। यही मनुष्य जीवन का उद्देश्य भी है। यदि मनुष्य अधिक समय निकाल सके तो अतिरिक्त समय में समस्त वैदिक साहित्य का अध्ययन करने से वह अच्छा विद्वान्, लेखक व उपदेशक बन कर अपना व समाज का अनेक प्रकार से कल्याण कर सकता है।

हमें सन्ध्या, अग्निहोत्र और सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय, यह तीन कार्य जीवन को उन्नत व श्रेष्ठ बनाने के सरल उपाय लगते हैं जिन्हें अल्प व अशिक्षित व्यक्ति भी अल्प प्रयास कर सिद्ध कर सकता है। हम आशा करते हैं पाठक इस पर विचार करेंगे और इन व्रतों को जीवन में धारण करेंगे जिससे वह धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष के मार्ग के पथिक बन कर अधोगति को प्राप्त न होकर उत्तम जीवनोन्नति व परमगति को प्राप्त होंगे।

जन्मते ही कान में वेद श्रवण-महासौभाग्य

आचार्य वेदमित्र, देवर्षि विद्यापीठ, नन्दगढ़

भूर्भुवः स्वः सुप्रजाः प्रजाभिः स्याथं सुवीरो वीरैः सुपोषः पोषैः। मनुष्य सभी जीवों से उत्कृष्ट इसीलिए है क्योंकि इसे प्रभु ने वेद ज्ञान दिया है। वाणी के द्वारा ही मनुष्य अपने से बलशाली शेर, हाथी, बैल, घोड़ों को अपने काम करवाने वाला बना लिया। वस्तुतः पशु-पक्षियों को अपना भोजन ग्रहण करना जन्म से आता है। वानर ने अपने बच्चों को एक बार भी नहीं बतलाया कि तुम्हें क्या खाना है क्या नहीं? जो वानर जंगल के खाद्य फल को जन्म से ही स्वयं जानता है वह जंगल के सूखने पर यह नहीं जानता इस फल के बीज को जल वाले स्थान पर बोलूँ। मनुष्य को बीज के बोने, अन्न उत्पादन तथा बैल के जोतने के ज्ञान को वेदमन्त्रों से सीखा। हिरण्यवक्ष से पृथिव्या-वेद ने भूमि में स्वर्ण होने का निर्देश किया। आभूषण के वर्णन तथा धारण करने के कारण ही मनुष्य ने इसे बनाकर धारण किया। यही नहीं सोने की भस्म बनाकर सर्वरोग हटाने की योग्यता प्राप्त की। इन्हीं पावन वेद के मन्त्रों से मनुष्य सर्वश्रेष्ठ बना। 'वेदोऽसि इति'। बालक के जन्मते ही पिता उसके कान में शाश्वत वेद का यह मंत्र बोलकर कह रहा है—तू वीरों में वीर, प्रजा की सेवा करने वालों में कृष्ण की तरह सर्वश्रेष्ठ बनना। मनुष्य को वेदवाणी सुनना ही नहीं आता इसे मनन करना भी आता है। सत्य कर्म से इतने साक्षात् ज्ञान प्राप्त करके इसने शेर हाथी से सुरक्षित घर बना लिया। आकाश में उड़ान भरकर वायुयान बना डाले। पृथ्वी पर अन्न औषधियों से सुखमय जीवन बना लिया। ब्रह्मचर्येण तपसा राष्ट्रं विरक्षति-मन बुद्धि का राजा बनकर क्रोध, द्वेष, भोग से दूर होकर स्वर्गमय जीवन जी लिया। क्या मछली तालाब के सूखने से पूर्व अपनी जान बचा पायी? क्षुद्र जीव-जन्तु आदि पक्षी की मृत्यु तथा असह्य पीड़ा से आज तक बच पाये। ओह! मनुष्य को वेदज्ञान (परम आनन्द दायक महौषध) मिल गया। सौभाग्य! महासौभाग्य! पृथ्वी पर जहाँ-जहाँ वेदज्ञान नहीं है वहाँ-वहाँ भी अज्ञान की पराकाष्ठा से कहीं बालिका से व्यभिचार, मत-मजहब में शिर कलम, अग्निदाह का क्रूर कृत्य, ब्रह्मचर्य न अपनाने से यौन तुष्टि का एड्स रूपी फल, सब जीवों को प्रभु के न समझने से मांसाहारियों के झूठे का UNO प्रपंच ही देखने को मिलेगा। अहिंसा, सत्य आचरण, दूसरों की सेवा के स्थान पर मोटी तनख्वाह व ब्रह्मचर्य के बिना मानसिक शान्ति नहीं मिल सकती। वेद में इन्हीं अहिंसा, साकाहार, ब्रह्मचर्य, दया, सेवा, स्नेह की शाश्वत शिक्षा को घर-परिवार राष्ट्र तथा विश्व में फैलाने के लिए पति-पत्नी सन्तान के गर्भ में अपने से पूर्व आह्वान करते हैं—

इन्द्राग्नी द्यावापृथिवी मातरिश्वा मित्रावरुणा भगो अश्विनोभा।
बृहस्पतिर्मरुतो ब्रह्म सोम इमां नारी प्रजया वर्धयन्तु॥

अथर्व० 14.1.54॥

वीर सैनिकों की जय बोलो

❑ पं० नन्दलाल निर्भय पत्रकार, भजनोपदेशक

भारत के सैनिक भारत की, करते हैं पहरेदारी।
वीर सैनिकों की जय बोलो, भारत के सब नर-नारी॥ टेक॥

सर्दी गर्मी वर्षा में, सीमा पर पहरा देते हैं।
कितनी भी विपदा आए, वे खुश होकर सह लेते हैं।
वैदिक मर्यादाओं को, बलशाली वीर सहेते हैं।
इसीलिए तो ये योद्धा, जनता के बड़े चहेते हैं।
सच्चे त्यागी तपधारी हैं, महाबली परहितकारी।
वीर सैनिकों की जय बोलो, भारत के सब नर-नारी॥ 1॥

भारत के दुश्मन भारत पर, जब-जब चढ़कर आते हैं।
देवभूमि भारत में पापी, जब उत्पात मचाते हैं।
वेद सभ्यता संस्कृति की, भारी हँसी उड़ाते हैं।
भारत के ये प्यारे योद्धा, उनका वंश मिटाते हैं।
भारत के गौरव रक्षण में, इन का योगादान भारी।
वीर सैनिकों की जय बोलो, भारत के सब नर-नारी॥ 2॥

अगर वीर सैनिक ना होंगे, हम ना बचने पायेंगे।
दुष्ट विधर्मी इस ऋषियों के, भारत को कब्जायेंगे।
भारत की प्यारी जनता पर, जुल्म रात-दिन ढायेंगे।
मन्दिर तुड़वाकर के मस्जिद, गिरिजाघर बनवायेंगे।
कुरान शरीफ बाइबिल के फरमान, यहाँ होंगे जारी।
वीर सैनिकों की जय बोलो, भारत के सब नर-नारी॥ 3॥

भारत के सेनानी जब, दुष्टों को धूल चटाते हैं।
भारत माँ की सेवा में, जब जीवन भेंट चढ़ाते हैं।
देशद्रोही लोग सैनिकों पर, पत्थर बरसाते हैं।
भारत के कुछ गन्दे नेता, उनका साथ निभाते हैं।
वे सब भारत के दुश्मन हैं, जो करते हैं गद्दारी।
वीर सैनिकों की जय बोलो, भारत के सब नर-नारी॥ 4॥

वीर सैनिको सुना ध्यान से, अपना सीना तान बढ़ो।
राम भरत लक्ष्मण बन जाओ, जामवंत हनुमान बढ़ो।
कृष्ण, भीम अर्जुन बन जाओ, विक्रम वीर महान् बढ़ो।
चन्द्रगुप्त के वंशज हो तुम, कर पूरी पहचान बढ़ो।
'नन्दलाल' है साथ तुम्हारे, भारत की जनता सारी।
वीर सैनिकों की जय बोलो, भारत के सब नर-नारी॥ 5॥

संपर्क-आर्यसदन बहीन, जनपद पलवल मो० 9813845774

कर्म करने में हम 'स्वतन्त्र' हैं, फल भोगने में 'परतन्त्र' हैं।

ईश्वर सर्वशक्तिमान् है...

❑ डॉ० बिजेन्द्रपाल सिंह, चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा (उ.प्र.)

एक कविता बच्चों की पाठशालाओं में पढ़ाई जाती थीं—'**जिसने सूरज चांद बनाया, जिसने तारों को चमकाया, जिसने चिड़ियों को चहकाया, जिसने सारा जगत् बनाया, हम उस ईश्वर के गुण गाएं, सदा भक्ति से शीश झुकायें।**' कविता पढ़ते ही हृदय में उस ईश्वर के प्रति श्रद्धा उत्पन्न हो जाती है। मस्तिष्क ईश्वर की बनाई इस चारों ओर अद्‌भुत रचना की ओर घूम जाता है। यह पर्वत हरे भरे वन उनमें वृक्ष लता पौधे पुष्प वहां कलरव करते पक्षी हिरन मोर सारस बत्तख व विभिन्न रंग के पक्षी नदियों में कलरव करता पानी, झरने, तालाब, आकाश में देखो तो पक्षी उड़ते हुए ऊपर चन्द्रमा कितना सुन्दर लगता है। रात्रि में झिलमिल करते तारे व दिन में उदय व अस्त होता दिनभर प्रकाश फैलाता सूर्य यह सब उस ईश्वर की तो रचना है वह इस ब्रह्माण्ड का रचनाकार है। विभिन्न प्रकार की कलाकृतियां उसी ने बनाई हैं, वह बहुत बड़ा कलाकार भी है। ऋतुएं सर्दी ग्रीष्म व वर्षात का होना दिन व रात्रि का होना। दिन में सूर्य का प्रकाश और रात्रिकाल में चन्द्रमा अपनी शीतल चांदनी बिखेरता है।

पृथ्वी कितनी विशाल है उस पर पर्वत व समुद्र हैं, सबके होते हुए अपनी धुरी पर घूम रही है। साथ में सूर्य की भी परिक्रमा करती है जिसका समय व दिशा निश्चित है। अपनी कक्षा में ही चक्कर लगाती है। अन्य ग्रह भी सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं और ब्रह्माण्ड अनन्त है पता नहीं इस ब्रह्माण्ड में कितने सूर्य और भी हैं, कितने ही सौरमण्डल हैं, वह सब किस शक्ति से चल रहे हैं, गति कर रहे हैं, ऐसी शक्ति अद्‌भुत शक्ति है वह सब ईश्वर ही रचता और चलाता है, वही ईश्वर इस सृष्टि की रचना करता है, उत्पत्ति करता है, सृष्टि बनाकर पालन करता है। इसीलिए उसने विभिन्न योनियां बनाईं उनमें श्रेष्ठ व विशेष रूप से मनुष्य को बनाया। मनुष्य विवेकशील है, उसने दुनिया को जानने के लिए पूरा प्रयत्न किया है, परन्तु ईश्वर को नहीं जान पाया जिसने अपनी अनन्त सामर्थ्य से यह जगत् बनाया है इसलिए ही वह सर्वशक्तिमान् है और इस कार्य में किसी की सहायता नहीं लेता। उसकी व्यवस्था विधिवत् है। बिना किसी की सहायता के ही उत्पत्ति-पालन-प्रलय करता है और जीवों को उनके अच्छे व बुरे कर्मों का फल देने की यथायोग्य व्यवस्था उसकी ही है। समस्त कार्य स्वयं करता है, किसी की सहायता नहीं लेता।

उस ईश्वर ने ही प्रकाश, वायु, पृथिवी, जल, पर्वत, समुद्र, वनस्पति, नदियां हमारे शरीर जीवात्मा युक्त हमें प्रदान किए हैं, सब ईश्वर द्वारा ही प्रदत्त हैं, जीवों के सुख भोगने हेतु हैं, परन्तु पुण्य-पाप का फल अवश्य देता है। कर्म के अनुसार फल देता व विभिन्न योनियों में भेजता है, यह उसका विधान है। सूर्य चन्द्रमा ग्रह सूर्य के चक्कर लगा रहे हैं, अपनी-अपनी निश्चित कक्षाओं में गति कर रहे हैं, एक क्षण भी आगे नहीं होते और एक सुई की नोंक के बराबर भी अपने मार्ग से इधर-उधर नहीं हटते। सदैव निश्चित कक्षा में निश्चित समय पर चलते हैं। पृथ्वी भी तीन सौ पैंसठ दिन में सूर्य की एक परिक्रमा करती है और अपनी धुरी पर चौबीस घण्टों में एक चक्कर पूर्ण कर लेती है, पृथ्वी गोल लगभग सेब के आकार की है, जब से सृष्टि बनी तभी से परिक्रमा कर रही है, सूर्य भी तभी से प्रकाश दे रहा है। प्रातः सूर्य उदय होता सायं को अस्त होता है। कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि उदय होने में घण्टे दो घण्टे का विलम्ब हो गया हो या उदय ही न हुआ हो या सायं को अस्त ही न हुआ हो और लगातार प्रकाश देता रहा हो, रात्रि ही न आयी हो।

मेरा कहने का तात्पर्य है कि इन सब कार्यों का संचालन कौन कर रहा है, इतना विधिवत् प्रकार से यह कार्य कर रहा है इतना व्यवस्थित रूप से कर रहा है वह परमपिता परमात्मा ही तो है, जगत् का पिता है, जगदीश्वर ही है, वह सर्वशक्तिमान् है, वह किसी की भी इस कार्य में सहायता नहीं लेता है जब सृष्टि का प्रलय करता है तब भी वह रहता है, सब कार्य करता है। सृष्टि को रचता है तब भी वह रहता है और रचना सम्बन्धी सब

कार्य करता है और सब सृष्टि को रचकर चलाता है, अर्थात् पालन करता है तब भी वह रहता है और सबका पालन करता है। वह अनादि है, प्रकृति भी अनादि है और जीव भी अनादि है परन्तु स्वरूप एक दूसरे से भिन्न है। कर्मानुसार जीव को विभिन्न योनियों में जन्म देता है। इनमें मानव की योनि श्रेष्ठ है। पुण्य-पाप के अनुसार सब जीवों की व्यवस्था करता है, उसकी व्यवस्था यथायोग्य है, यही सर्वशक्तिमान् का कार्य है। जीव कर्म करने में स्वतन्त्र है उसको पुण्य व पाप कर्म के अनुसार वह ईश्वर ही फल देता है। जो व्यवस्था उसने बनाई है, उसके विरुद्ध वह कभी कुछ नहीं करता ऐसा कभी नहीं कि सूर्य उदय तो हो गया परन्तु अस्त करना भूल गया या अस्त तो हो गया उदय करना भूल गया। उसके सब कार्य विधिवत् व्यवस्थित होते हैं, वह परमात्मा है, सर्वशक्तिमान् है, वह आलसी नहीं आलस्य तो जीव का गुण है, जीव अपने कार्य में त्रुटि कर सकता है, ईश्वर नहीं। उसके द्वारा जो कार्य चल रहे हैं, एकदम व्यवस्थित हैं। चांद-तारे-ग्रह घूम रहे हैं परन्तु कभी कोई परस्पर टकराता नहीं जबकि मानव निर्मित गाड़ियां कभी-कभी टकरा जाती हैं, यही ईश्वर व जीव में अन्तर है उसकी व्यवस्था में कभी कोई त्रुटि नहीं होती मनुष्य या जीव अपने जीवन में त्रुटियां करता रहता है और मन, वचन, कर्म से जैसा अच्छा-बुरा करता है वैसा ही फल अच्छा व बुरा जीव ही भोग करता है। कर्म करने में जीव स्वतन्त्र है। पाप कर्म करता है तो दुःख स्वरूप फल भोगने में जीव परतन्त्र है, ईश्वर जीव के कर्मों को देखता है, पश्चात् जैसा कर्म जीव करता है, उसका वैसा ही फल देता है। जैसा कि परीक्षा कक्ष में छात्र परीक्षा देते हैं। कोई प्रश्न का हल उचित व सत्य लिखता है और कोई छात्र असत्य लिखता है, कक्ष निरीक्षक देखता तो है, परन्तु किसी से ऐसा नहीं कहता कि वह सत्य या असत्य लिख रहा है। इसका पता तब चलता है जब परिणाम आते हैं। वैसे ही ईश्वर जीव को लगातार देखता है परन्तु क्योंकि कर्म करने में जीव स्वतन्त्र है वह चाहे अच्छा करे या बुरा करे वह कुछ भी कहता नहीं, रोकता नहीं, परन्तु उसका कर्मफल अवश्य देता है, ऐसी उसकी व्यवस्था है वह भी यथायोग्य व्यवस्था है। उसने मानव के लिए ज्ञान दिया है कि सत्य मार्ग पर चलना चाहिए जैसा कि वेदज्ञान। यह ईश्वर की वाणी है, उस ईश्वर के मार्ग वेद का ही अनुसरण करना योग्य है। यह सब विधिवत् जो व्यवस्था है, संसार जिससे चल रहा है, उसके सर्वशक्तिमान् होने से ही चल रहा है। उसी से दिन-रात पक्ष-वर्ष (संवत्सर) होते हैं, जीवों के जन्म-मृत्यु, सृष्टि की रचना अर्थात् उत्पत्ति पालन व प्रलय होता है। उसकी अपनी विधिवत् व्यवस्था से ही सब कार्य होते रहते हैं। उसकी महिमा अपार है, वह पूर्ण ज्ञानी है, जीव तो अल्पज्ञ है। ग्रह-तारे-नक्षत्र कहाँ तक हैं, वही ईश्वर जानता है। वैज्ञानिक तो अभी खोज ही कर रहे हैं, परन्तु सृष्टि कहाँ तक रची है, कैसी है, पूरी खोज नहीं की जा सकती। एक सूर्य है, दो हैं या अनगिनत हैं, कुछ निश्चित नहीं, अनन्त सृष्टि का उसको ही पता है जिसे वह चला रहा है, उसकी ही व्यवस्था है, इस ब्रह्माण्ड के विषय में वही जानता है, सब कुछ जानता है, वह पूर्ण ज्ञानी है। हमें उस सर्वशक्तिमान् का ध्यान नित्यप्रति करना चाहिए हमें भी उसने बनाया है यह जीवन भी उसका ही है। उस ईश्वर की भक्ति करें, स्तुति-प्रार्थना-उपासना किया करें।

कृपया आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पुस्तकालय से निम्नलिखित पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं—

28. अभ्यास और वैराग्य	36. ईश्वर का सच्चा स्वरूप
29. अथर्ववेदीय ब्रह्मगौ-सूक्त	37. भगवान् एकलिंग
30. कालजयी संत महर्षि दयानन्द सरस्वती	38. मेरा आध्यात्मिक सामाजिक चिन्तन
31. वैराग्य शतक-भर्तृहरि	39. भारत में सशस्त्र क्रान्ति-चेष्टा का रोमांचकारी इतिहास (प्रथम खण्ड)
32. आस्तिकवाद	
33. सरल शब्दरूपावली	
34. व्याख्यान मुक्तावली	40. ध्यान तथा उपासना
35. राजा राममोहनराय, केशव चन्द्र सेन, स्वामी दयानन्द	41. वैदिक योगामृत एवं योगमार्ग
	42. सन्मार्ग दर्शन

आर्यसमाजों के उत्सवों की सूची

1. भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, जसात (गुड़गांव)	28 मई से 4 जून 2017
2. आर्यसमाज गाहड़ा (महेन्द्रगढ़)	3 से 4 जून 2017
3. आर्यसमाज कोसली (रेवाड़ी)	10 से 11 जून 2017
4. आर्यसमाज कनीना (महेन्द्रगढ़)	17 से 18 जून 2017

—आचार्य कर्मवीर, सभा वेदप्रचाराधिष्ठाता

समाचार-प्रभाग

वेदप्रचार मण्डल जिला गुरुग्राम द्वारा वेदप्रचार कार्यक्रम

15.3.17 गुरुग्राम के सैक्टर-5, हुडा ग्राउंड में वेदप्रचार मण्डल गुरुग्राम की तरफ से पहला वेद प्रचार-प्रसार का कार्यक्रम किया गया। इस कार्यक्रम में यज्ञ-भजन-प्रवचन किया गया। इस कार्यक्रम में लगभग 200 महिला-पुरुष व बच्चे शामिल हुए। यज्ञ के ब्रह्मा श्री वेद जी थे। मण्डल प्रधान श्री के.सी. सैनी ने बताया कि इस इलाके में इससे पहले कभी इस प्रकार का कोई आयोजन आज तक नहीं हुआ था। लोगों ने कार्यक्रम को खूब सराहा तथा भविष्य में भी कार्यक्रम की मांग रखी। इसके साथ मंडल उपप्रधान श्री जयनारायण, महामन्त्री श्री वेदभानु आर्य, राजेश बल्हारा, पार्थसिंह चौहान आदि महानुभावों ने भी अपने विचार रखे। 19.3.17 गुरुग्राम के सैक्टर-23 मैन पार्क में यज्ञ व प्रवचन का कार्यक्रम हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य वेद जी, उपस्थिति-लगभग 100 व्यक्ति। मण्डल अधिकारी-श्री केसी सैनी प्रधान, श्री वेदभानु आर्य महामंत्री। 28.3.17 राजेन्द्रा पार्क इलाके में सुबह तथा सुशान्त लोक में सायंकाल को कार्यक्रम रखा गया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री कन्हैयालाल आर्य (उपप्रधान-आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा), बड़ा ही सुन्दर कार्यक्रम रहा। उपस्थिति-राजेन्द्रा पार्क-150 तथा सुशान्त लोक-250। मण्डल अधिकारी-श्री केसी सैनी प्रधान, श्री वेदभानु आर्य महामंत्री, जयनारायण जी बहन उषा आर्य। 2.4.17 बसई गांव में सायंकाल 5 से 7 बजे भजन संध्या का कार्यक्रम रखा गया। इस प्रोग्राम में पण्डित संदीप शर्मा की भजनमण्डली द्वारा बड़ा ही सुन्दर व प्रभावी कार्यक्रम दिया गया। इस अवसर पर श्री नरवीरलाल कोषाध्यक्ष, मुख्य कार्यकर्त्ता श्री तिलकराज उपमंत्री, श्री वेदराम उपप्रधान विशेषरूप से उपस्थित थे। लोगों ने कार्यक्रम की खूब प्रशंसा की। 13.4.17 सायंकाल हुडा पार्क सैक्टर-5 में वैशाखी उत्सव व भजन सन्ध्या कार्यक्रम आयोजित किया गया। बहन उषा आर्या, कृष्णा आर्या तथा बहन लक्ष्मी देवी जी की विशेष भूमिका रही। श्री के.सी. सैनी, श्री वेदभानु आर्य आदि अधिकारियों ने भी सभा को सम्बोधित किया। 13.4.17 सैक्टर-23ए पार्क में यज्ञ/उपदेश कार्यक्रम सुबह नौ से बारह बजे तक चला। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य वेद जी। 200 लोग लगभग उपस्थित रहे। 23.4.17 को हुडा वाटर प्लांट में यज्ञ-हवन का कार्यक्रम रखा गया। बहन उषा आर्या व आर्य वेद जी के संयुक्त प्रयास से बहुत सुन्दर आयोजन हुआ। X.en हुड्डा ने अनुरोध किया कि इस प्रकार के आयोजन समय-समय पर होते रहने चाहिएं।

आर्यसमाज खलासी लाइन सहारनपुर (उ.प्र.) का वार्षिक चुनाव

प्रधान-श्री विजय कुमार गुप्ता, उपप्रधान-राजकिशोर सैनी, श्री योगराज शर्मा, मंत्री-श्री रविकांत राणा, उपमंत्री-श्री कृष्णलाल शर्मा, श्री आशीष कुमार, कोषाध्यक्ष-डॉ. राजवीर वर्मा, आय-व्यय निरीक्षक-श्री सुरेश कुमार सेठी, पुस्तकाध्यक्ष-श्री जितेन्द्र आर्य। **-श्री रविकांत राणा, मंत्री**

निर्वाचन

आर्य केन्द्रीय सभा सोनीपत (पं०) के द्विवार्षिक साधारण अधिवेशन में आगामी कार्यकाल 2017-2019 हेतु श्री रणधीरसिंह ढुल्ल को सर्वसम्मति से प्रधान घोषित किया गया। सर्वसम्मति से कार्यकारिणी निम्न प्रकार गठित की गई—श्री वेदमुनि (वेदपाल आर्य)-संरक्षक, श्री अशोक गोयल-मुख्य सलाहकार, श्री रणधीरसिंह ढुल्ल-प्रधान, श्री ईश्वर दयाल शर्मा-उपप्रधान, श्री सुभाष चाँदना-उपप्रधान, श्री रमेश बजाज-उपप्रधान, श्री सुदर्शन आर्य-महामंत्री, आचार्या दीक्षा जी-उपमंत्री, श्री अशोक आर्य-कोषाध्यक्ष, श्री सुधांशु मित्र शास्त्री-वेदप्रचार अधिष्ठाता, श्री वीरसेन श्रीधर-आर्य वीर दल अधिष्ठाता, श्री कपिल देव दहिया-प्रेस सचिव।

नवान्न यज्ञों का आयोजन

भाऊ आर्यपुर रोहतक में आचार्य वेदमित्र जी के सान्निध्य में प्रत्येक रविवार सायं गांव के ठोलों में नवान्न यज्ञ हो रहा है। आचार्य जी ने कहा कि हरयाणा में नवान्न यज्ञ की परम्परा रही है उसे नवसस्येष्टि न कहकर हनुमान का रोट या सवामणी कह देते हैं। गांव में यज्ञ का प्रभाव बहुत है। जहां अनेक घरों में यज्ञ होता है, वहीं आर्य परिवारों में नवान्न यज्ञ भी होते हैं। 8 ढोलों में से 3 में यज्ञ सम्पन्न हो गये हैं। श्री रामकंवार, श्री महावीर, श्री आकाश, श्री संदीप मास्टर के यहां नवान्न यज्ञ किया गया। 11 मई को आर्यसमाज बेरी के प्रधान श्री महेन्द्र जी के घर पर नवान्न यज्ञ आचार्य जी ने सम्पन्न करवाया। आचार्य जी ने कहा कि प्रभु की कृपा से घर में अन्न, धन, पुत्र-पौत्र आदि द्वरा यज्ञ कार्य होने का बिरले सद्गृहस्थ को सौभाग्य प्राप्त होता है। यज्ञ कर्म से सन्तानों में उत्तम संस्कार भी प्राप्त होते हैं। 12 व 13 मई को न्यू पालम विहार गुड़गांव में श्री सोमवीर के घर पर आचार्य जी के ब्रह्मत्व नवान्न यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ में अनेक स्त्री-पुरुषों के साथ-साथ युवाओं ने भी भाग लिया। आचार्य जी ने युवाओं से

कहा कि साधना तथा धर्म कार्य करने से चित्त में निर्मलता आती है जो सब सुखों का मूल है। इसी प्रकार श्री अमरदीप यादव, श्री जगमेन्द्र मलिक व न्यू पालम विहार आर्यसमाज में भी आचार्य जी द्वारा नवान्न यज्ञ सम्पन्न हुए।

आर्य बाल भारती विद्यालय की सफलता

आपको सूचित करते हुए बहुत हर्ष हो रहा है कि हमारे विद्यालय ने एक नया कीर्तिमान् स्थापित किया है। 11 मई, 2017 को N.C. Engineering College, Israna में Declamation Contest था जिसका विषय था, "Creating Employment Opportimity with Technology."

हमारे विद्यालय की पांच छात्राओं-विधि (X), खुशी (X), प्रगति (XI), मुस्कान (XI) और तमन्ना (XII) ने भाग लिया। यह प्रतियोगिता X, XI, XII, Graduate और Post-Graduate विद्यार्थियों के मध्य थी जिसमें 24 संस्थानों के 120 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता की जिम्मेदारी शिक्षिका विम्मी मल्होत्रा को सौंपी गई थी। इस प्रतियोगिता में **प्रगति** ने 'तृतीय' स्थान हासिल करके आर्य बाल भारती विद्यालय का नाम रोशन किया। हमारे लिए यह बहुत ही गर्व की बात है कि हमारे विद्यालय में ऐसे प्रतिभाशाली शिक्षक और विद्यार्थी हैं।

पोस्टर मेकिंग जिला स्तरीय प्रतियोगिता

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल के बच्चों ने बाल भवन में आयोजित पोस्टर मेकिंग जिला स्तरीय प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। वहाँ पानीपत के लगभग सभी स्कूलों के 350 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया जिसमें आर्य बाल भारती स्कूल की ही छात्रा सुनयना (नौवीं कक्षा) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहाँ पर ईशा को प्रमाण-पत्र, मैडल और 600 रुपये नकद देकर पुरस्कृत किया और सुनयना को प्रमाण पत्र, मैडल और 250 रुपये नकद पुरस्कृत किया जो कि आर्य बाल भारती स्कूल के लिए गर्व की बात है। वहां पर आर्य बाल भारती स्कूल से हिस्सा लेने वाले अन्य छात्रों (हिमानी, अंशु, शिप्रा, सोनिया, संयोगिता) की निर्णायक मंडल ने दिल खोलकर प्रशंसा की और उनकी अध्यापिका को सम्मानित करते हुए कहा कि यह सब उन्हीं की मेहनत का नतीजा है।

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिनांक 10 व 11 मई को आर्यसमाज गुन्दयाना जिला यमुनानगर का वार्षिकोत्सव सुसम्पन्न हो गया है। इस अवसर पर महाशय जसविन्द्र आर्य भजनोपदेशक व गुरुकुल कुरुक्षेत्र के महाशय जयपाल अपनी मण्डलियों सहित पधारे थे। इन दोनों ने अपने क्रान्तिकारी व कुछ सामाजिक विषयों पर आधारित गीतों से श्रोताओं को बहुत प्रभावित किया। इनके अतिरिक्त यमुनानगर से पं० इन्द्रजित् देव, वैदिक मिशनरी भी आमन्त्रित थे। उन्होंने अपने भाषणों द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के साथ महात्मा बुद्ध, राजा राममोहन राय, संत रविदास व सन्त कबीर आदि की कार्यों व गुणों के आधार पर तुलना करके महर्षि को श्रेष्ठतर सिद्ध किया व देश के गौरवमय इतिहास की कहानी भी सुनाई। उन्होंने एक प्रवचन में ईश्वर के कुछ गुणों के आधार पर उपासनीय सिद्ध किया। उत्सव में दूर-निकट के बहुत से नारी-नर उपस्थित हुए।

—सिंगराम, प्रधान

आर्यसमाज की स्थापना की गई

जिला सहारनपुर के गांव मुजफ्फरपुर में आर्यसमाज की स्थापना दिनांक 6 मई को क्षेत्र के अनेक गणमान्य लोगों की उपस्थिति में यज्ञ करने से हुई। पूरा कार्यक्रम 6 व 7 मई को प्रतिदिन यज्ञ करने से प्रारम्भ होता रहा। इस अवसर पर यमुनानगर से आए पं० इन्द्रजितदेव, वैदिक मिशनरी ने प्रवचन में बताया कि आर्यसमाज एक आन्दोलनात्मक संस्था है, न कि यह कोई धर्म है। वैदिक धर्म के प्रचार व समाजसुधार में इसने कैसे-कैसे कार्य किये हैं, यह भी आपने स्पष्ट किया। उत्सव में सुप्रसिद्ध भजनीक पं० सुखपाल आर्य व पं० मदनलाल जी ने दोनों दिन श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किए रखा। दोनों दिन ऋषिलंगर की भी सुन्दर व्यवस्था की गई।

—मास्टर जगदीश, प्रधान

कक्षा 10+2 का मार्च 2017 का वार्षिक परीक्षा परिणाम

दिनांक 19 मई 2017 को हरयाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड द्वारा सत्र 2016-17 का बारहवीं कक्षा का वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषित किया गया जिसमें आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पानीपत के बारहवीं का परीक्षा परिणाम शानदार एवं प्रशंसनीय रहा।

सत्र 2016-17 के कक्षा 10+2 के परीक्षा परिणाम का ब्यौरा
परीक्षा में उपस्थित विद्यार्थी-69, मैरिट-18, प्रथम श्रेणी-43

शानदार परीक्षा परिणाम के लिए विद्यालय के स्टाफ एवं छात्राओं को आर्य विद्या परिषद् हरयाणा की तरफ से हार्दिक बधाई। इसमें प्राचार्य श्रीमती सुशीला जी का सहयोग भी उल्लेखनीय है।

—आचार्य सर्वमित्र आर्य, प्रस्तोता, आर्य विद्या परिषद्
हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक

अपने कार्य में कामचोरी-आलस्य-प्रमाद न करें, पूरी मेहनत से काम करें। आपका भविष्य बहुत अच्छा होगा।

शोक-समाचार

दिनांक 15.5.2017 को श्री अमरसिंह जी पूर्व हैडमास्टर का 88 वर्ष की आयु में कुछ समय से अस्वस्थ रहने से मृत्यु हो गई। यह सुनकर सभी परिजनों, परिचितजनों और गांव सांघी निवासियों को बड़ा दुःख हुआ। स्व० अमरसिंह जी बड़े श्रद्धालु तथा धर्मपरायण उत्तम संस्कारों से ओतप्रोत थे। उन्होंने ही अपने सद्विचारों से पूरे परिवार का उत्तम संस्कारों से ओतप्रोत किया। स्वर्गीय अमरसिंह जी ने 1953 के करीब डीएवी हाईस्कूल सांघी में बच्चों को पढ़ाना शुरू किया था। शिक्षा के साथ-साथ उन्हें संस्कारित भी करते थे। उस समय गांव में सांग, सिनेमा और धूम्रपान का अधिक प्रचलन था। उससे भी उन्हें बचाते थे। 1989 में शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्ति के बाद अपने पैतृक गांव सांघी में अपना निजी स्कूल बनाकर उसके माध्यम से विद्या के चिराग की रोशनी को आगे बढ़ाना शुरू किया और 88 वर्ष की आयु तक रोहतक के गांव सांघी में जाकर विद्यार्थियों को पढ़ाते थे। स्वर्गीय अमरसिंह जी के ही सद्विचारों से इस परिवार के सदस्य शिक्षा को आगे बढ़ाने हेतु शिक्षा विभाग में अधिक सेवा कर रहे हैं। यह परिवार एक संयुक्त परिवार है जिससे इस परिवार में कई गुण हैं। किसी की चुगली न करना और न ही किसी से झगड़ा करना। सामाजिक और धार्मिक कार्यों में यथायोग्य सहयोग करना। ऐसे परिवार से किसी सामाजिक व्यक्ति की मृत्यु हो जाने से परिवार के साथ समाज को भी बड़ा दुःख होता है। मेरी परिजनों से विनती है कि ऐसे महापुरुष की स्मृति में किसी धार्मिक स्थान या विद्यालय में एक त्रिवेणी (बड़, पीपल और नीम) लगाई जाये ताकि उनकी याद बनी रहे और प्रदूषण मुक्त जलवायु बना रहे। हम सबकी परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि प्रभु दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे और स्वर्गीय अमरसिंह जी की मृत्यु के पश्चात् परिवार और परिचितजनों को जो दुःख हुआ है उसे सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

उसका जीना व्यर्थ है जो करके कुछ नहीं दिखलाता है।
उससे तो पशु भला है, जो काम सैकड़ों आता है॥

—भलेराम आर्य, F-8, इन्द्रप्रस्थ कॉलोनी, रोहतक

आर्य वीर दल हरयाणा के तत्त्वावधान में ग्रीष्मकालीन शिविर

क्र.सं.	दिनांक	स्थान	सम्पर्क सूत्र
1.	25 मई से 30 मई	डी.ए.वी. स्कूल सोनीपत	वेदप्रकाश आर्य 9896021736
2.	4 जून से 11 जून	आर्य पब्लिक स्कूल सैक्टर-4, गुड़गांव	श्याम सुन्दर आर्य 9312979886
3.	4 जून से 11 जून	S.M. हिन्दू हाई स्कूल सोनीपत	वेदप्रकाश आर्य 9896021736
4.	1 जून से 5 जून	गुरुकुल कुरुक्षेत्र	भोपाल सिंह आर्य 9467191587
5.	5 जून से 11 जून	दयानन्दमठ, रोहतक	देशराज आर्य 9215212533
6.	5 जून से 11 जून	गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ	आचार्य ऋषिपाल 9816687124
7.	5 जून से 11 जून	दयानन्द स्कूल, पलवल	हीरालाल आर्य 9813299400
8.	11 जून से 18 जून	बसन्त पब्लिक स्कूल माजरा भालकी, नारनौल	आचार्य डॉ. नरेन्द्र 9728300909
9.	11 जून से 18 जून	राज.वि. मीरजापुर बल्लभगढ़	होतीलाल आर्य 9871368474
10.	12 जून से 18 जून	राज.वि. रसूलपुर	सतीश आर्य 9813703274
11.	19 जून से 25 जून	जनसेवा हाई स्कूल भिवानी	विमलेश आर्य 9896176185
12.	26 जून से 2 जुलाई	दयानन्द स्कूल, फिरोजपुर	जयपाल आर्य 9991460771
		वीरांगना शिविर	
13.	29 मई से 2 जून	डर.ए.वी. स्कूल पानीपत	अशोक वर्मा 9812035862
14.	12 जून से 18 जून	वैदिक भक्ति साधन आश्रम, रोहतक	देशराज आर्य 9215212533
15.	4 जून से 11 जून	आर्यसमाज सैक्टर-4 गुड़गांव	श्याम सुन्दर आर्य 9312979886
		सार्वदेशिक आर्य वीर शिविर	
16.	5 जून से 20 जून	गुरुकुल पौंधा देहरादून	स्वामी देवव्रत जी 9868620631
		सार्वदेशिक आर्य वीरांगना शिविर	
17.	22 मई से 28 मई	कन्या गुरुकुल पिल्लूखेड़ा मण्डी, जीन्द	स्वामी धर्मदेव 9416339987
18.	28 मई से 4 जून	भगवती आर्ष कन्या महाविद्यालय, जसात	मृदुला चौहान 9810702760
19.	7 जून से 11 जून	गुरुकुल कुरुक्षेत्र	भोपाल सिंह आर्य 9467191587

नोट—जीन्द, करनाल, कैथल, भड़ताना तथा अन्य स्थानों पर शिविरों की तिथियां अगले अंक में सूचितकी जाएंगी। आप अपने बच्चों के चरित्र निर्माण एवं वैदिक संस्कारों से ओतप्रोत करने हेतु शिविर में भेजें।

—वेदप्रकाश आर्य, प्रान्तीय मन्त्री, मो० 9896021736

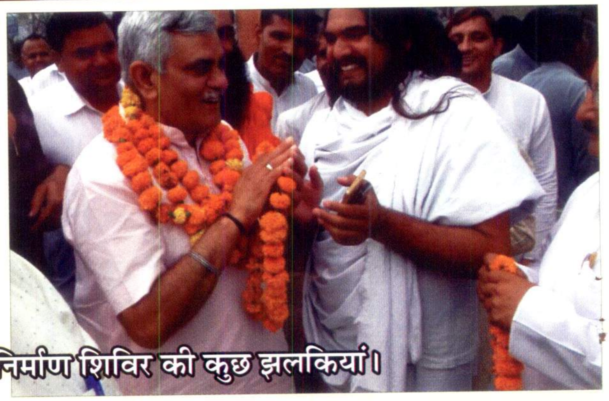

कन्या गुरुकुल पिल्लूखेड़ा में चरित्र निर्माण शिविर की कुछ झलकियां।

गुरुकुल लाढ़ौत में करौंथा काण्ड के अमर शहीद आचार्य उदयवीर की याद में आयोजित कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्द मठ रोहतक की संस्था आर्य सी. सै. स्कूल सिरसा व आर्य महाविद्यालय कालांवाली का औचक निरिक्षक करते हुए सभा प्रधान मा० रामपाल आर्य व प्रस्तोता आचार्य सर्वमित्र आर्य।

हिन्दू महासम्मेलन में अपने विचार रखते हुए सभा मंत्री आचार्य योगेन्द्र आर्य।

Postal Regn. - RTK/010/2017-19

श्री ....

पता ....

....

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा (रजि.) के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक आचार्य योगेन्द्र आर्य ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक-124001 से प्रकाशित।

- सम्पादक आचार्य योगेन्द्र आर्य